मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :— एम. आर. भक्त
पी. एस. ई (रीटार्यड)

वर्ष ६ | सोमवार १० सितम्बर १९७९ | संख्या ५

परमार्थ व स्वार्थ प्रदान करने वाली शिक्षा

सत्संग हजूर परमदयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर ।

दिनांक 18-11-79

हम दीन अधीन दुखी जीवों को, चिता दिया सतगुरु स्वामी ने।
भव सिंध में डूबने वालों को, तैरा दिया सतगुरु स्वामी ने।
मद मोह माया के मारे थे, दुख आपति से दुखयारे ने।
कर दया दृष्टि छुटकारा इन से, दिला दिया सतगुरु स्वामी ने।
अज्ञान ने भरमाया था हमें, और करम ने बहकाया था हमें।
सत संगत के बचन से भरम, मिटा दिया सतगुरु स्वामी ने।
पहले नहीं गुरु गम को जाना, जब आंख खुली तब पहचाना।

निज रूप का दर्शन अपने घट में करा दिया सतगुरु स्वामी ने।

तज पिंड को पहुंचा ब्रह्मण्डा, आगे बढ़ आया सच्च खंडा।
सत धाम से सत का बिमल स्वरूप, दिखा दिया सत गुरु स्वामी ने।

लख अलख अगम की गम पाई, ली राधास्वामी पद की शरनाई।

धुर धाम संत विसराम लोक, पहुंचा दिया सतगुरु स्मामी ने।
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी राधास्वामी।
राधास्वामी के नाम का मरम, जता दिया सतगुरु स्वामी ने।

मैंने यह शब्द सुना। अपनी आत्मा से पूछता हूं कि जो कुछ यह लिखा हुआ है क्या यह ठीक है? अगर तू बिना सच्चाई अर्थात बिना अपने अनुभव के दाता दयाल की बाणी का पक्ष करता है तो तू दोषी, पापी और गुनहागार है। मैंने इसे क्या समझा? मैं इसे कैसे सच्च मानता हूं?

"हम दीन अधीन दुखी जीवों को, चिता दिया सतगुरु स्वामी ने" यह तो आसान शब्द है। मैं अपने आपको दीन समझता था, मैं क्या, सभी अपने आपको छोटा समझते हैं कि हम कुछ नहीं। मेरी यह दशा थी। मेरे साथ गुरु ने क्या किया? चिता दिया।

चिताना क्या था ? मुझे समझ दे दी कि असलियत क्या है, तू क्या है, कहां से आया है और तेरा क्या परिणाम है ? इसे चिताना कहते हैं। मैं क्या चेता हूं ?

भव सिंध में डूबने वालों को, तैरा दिया सतगुरु स्वामी ने।

यह ठीक है। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीरचन्द ! तू कहीं संतों की अनुचित प्रशंसा तो नहीं करता ? यह बात नहीं है। मैं मन के चक्कर में बैठा था। दाता के चरणों में गया, उन्होंने मेरे अज्ञान को सम्भाला। जब मेरी समझ में बात नहीं आती थी तो यह काम दिया। जब आप लोगों से पता लगा कि मेरा रूप तुम्हारी सहायता करता है और मैं नहीं होता तो मुझे विश्वास हो गया कि जो कुछ मेरे अन्तर पैदा होता है, असल में यह भी नहीं है। ये केवल संस्कार *Suggestions and Impressions* हैं। जिस प्रकार किसी ने मेरा नाम सुन लिया उसे विचार मिल गया या मेरी कोई किताब पढ़ ली तो मेरे ध्यान में बैठ गया। उसके अन्तर मेरा रूप प्रकट हो गया और उसका काम कर गया, लेकिन मैं तो

गया नहीं । मुझे इससे क्या चेतावनी मिली ? कि मेरे अन्तर जो कुछ पैदा होता है यह कुछ नहीं, केवल संस्कार *Suggestions and Impressions* हैं और विचार हैं जो मुझे मिला था और मैं उसे सत्य मानता था। जिससे मैं सुखी दुखी होता था। जब तुम लोगों से यह पता लगा कि मेरा रूप तुम्हारी सहायता करता है और मैं नहीं होता। बस ! इस एक विचार ने :-

भव सिंध में डूबने वालों को, तैरा दिया सतगुरु स्वामी ने।

भव सिंध क्या था ? मन रूपी समुन्दर के जो विचार उठते थे जिसमें हम दुखी सुखी, खुश, नाराज़ होते थे उसका पता लग गया कि यह क्या है। वह कुछ भी नहीं था। केवल संस्कार *Suggestions and Impressions* थे इनमें कोई सच्चाई नहीं थी। जिस प्रकार लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है लेकिन मैं नहीं होता, न ही मुझे पता होता है, तो चेतवान हो गया और भव से निकल गया। अभी भवसागर में हूं मगर भवसागर अर्थात मन के विचार मुझे दुखी नहीं करते। मैं इस विचार से इस बाणी को सच्चा मानता हूं :-

भव सिंध में डूबने वालों को, तैरा दिया सतगुरु स्वामी ने।

मैं अपने मन के चक्कर में ही दुखी था। कभी राम को ढूंढता था, कभी कुछ करता था, कभी कुछ, किसी से शत्रुता और किसी से मित्रता। मुझे चिंता कर आज़ाद कर दिया। वह लिखते थे मगर मैं संकेत नहीं समझ सकता था। मुझे समझाने के लिए यह काम दिया था। मैं न गुरु न महात्मा हूं और न ही मुझे गुरु बनने की चाह है। मैं तो केवल यह समझना चाहता था कि यह संतमत या राधास्वामीमत क्या बला है जिसने मेरे पूर्वजों की ऐसी तैसी की हुई है। न राम, न कृष्ण न वेदान्त और न सूफीमत को छोड़ा है। मैं सोचता था कि मैं कहां फंस गया। मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूंगा, जो कुछ मिलेगा बता जाऊंगा :—

मद मोह माया के मारे थे दुख आपति से दुखियारे थे।
कर दया दृष्टि, छुटकारा इनसे, दिला दिया सतगुरु स्वामी ने।

गुरु की दया दृष्टि क्या है? संसार ने नहीं समझा। मैं स्वयं नहीं समझता था तुम्हें क्या कहूं? गुरु की दया दृष्टि यह है कि वह मानव की बुद्धि को

निश्चयात्मिक बना देता है और उसे किसी बात का पूर्ण विश्वास करा देता है।

जब दया दृष्टि हो गई तो निश्चय की शक्ति मिल गई।

आदमी में विश्वास की शक्ति आ जाती है और वह कब आती है ? जब वह गुरु की संगत में जाकर गुरु की बातों को सुनता, गुनता, सोचता और विचारता है मगर संसारी लोग भवसागर से निकलने के लिए मेरे पास नहीं आते न संतों के पास जाते हैं, वे तो भवसागर में तरने के लिए जाते हैं। संसारी मोक्ष के लिए नहीं जाते हैं। वे तो कोई बेटा, कोई धन और कोई बीमारी से छुटकारा चाहता है।

अज्ञान ने भरमाया था हमें, और करम ने बहकाया था हमें
संत संगत के बचन से भरम, मिटा दिया सतगुरु स्वामी ने।

गुरु क्या करता है ? सत्संग देकर भरम मिटाता है। मगर किनके ? जो भ्रम मिटाने के लिये जाते हैं। क्या संसार भ्रम मिटाने जाता है ? वे तो संसार से दुखी हैं। कोई कुछ चाहता है। और कोई कुछ चाहता है। यह तो संसार ही ऐसा है।

गुरु का क्या काम हुआ ? मैंने राधास्वामीमत में आकर क्या समझा ? कि यह सारा खेल मन का

है । मैं मन से कैसे निकला ? केवल आप लोगों के अनुभवों के कारण, जिससे मैं सत्संगियों को अपना गुरु मानता हूं, क्योंकि इन अनुभवों ने मेरी आंख खोल दी । इस भेद को परदे में रखकर पंथ, गद्दियां और डेरे बन गये और हम गरीबों को अंधकार में रखकर लूटा गया है । किसी ने सच्ची बात नहीं बताई और अगर बताई भी तो इशारों में बताई । मैं उनका कोई दोष नहीं समझता क्योंकि हम सच्ची बात सुनने के लिए नहीं जाते हैं ।

पहले नहीं गुरु गम को जाना, जब आंख खुली तब पहचाना ।

मैंने गुरु गम को नहीं जाना यद्यपि मैं गुरुमत में 1905 से शामिल था मगर मुझे गुरुमत का भेद नहीं मिलता था । अब तुम लोगों की दया से यह भेद मिला । पहली दया तो दाता दयाल की है, अगर वह यह काम न देते तो मेरी समझ में न आता । जो गुरु बने हुए हैं, जिनकी समझ में है वे भी नहीं बताते हैं । अगर वे बतायें तो धन नहीं आता, लोग मथ्थे नहीं टेकते और डेरे नहीं बनते ।

निज रूप का दर्शन अपने घट में, करा दिया सतगुरु स्वामी ने ।

मुझे पता नहीं कि दाता दयाल का क्या भाव है। मैं अपना अनुभव कहने का हक्क रखता हूं जो मैंने समझा है। दाता दयाल के कहने अनुसार कि शिक्षा को बदल जाना, मैंने निज रूप का भाव क्या समझा ? जब तुम लोगों से पता लगा कि मेरा रूप तुम्हारे अन्तर है और मैं नहीं होता तो अब मैं क्या करता हूं ? मेरे मन के जितने खेल हैं सब समाप्त हो जाते हैं अर्थात भूर्भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यं सब समाप्त हो जाते हैं। सहस दल कंवल त्रिकुटि, सुन्न महासुन्न भवर गुफा और सत्लोक भी समाप्त हो जाते हैं। मैं इनका साधन नहीं करता। क्यों नहीं करता ? जो कुछ भी मेरे अन्तर या किसी के अन्तर दिखाई देता है, ये संस्कार *Suggestions and Impressions* हैं। यद्यपि बाहर से कोई भी नहीं जाता। वह उसका अपना ही मन था। अब मन से ऊपर चला जाता हूं। आगे प्रकाश और शब्द हैं। प्रकाश में रहकर उस चीज़ की तलाश करता हूं जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। वह मेरा निज रूप है। प्रकाश मेरा निज रूप नहीं है, प्रकाश मेरे निज रूप का एक शरीर है। शब्द उप चीज़ का

गिलाफ है जो शब्द को सुनती है, उसका एक शरीर है। जब वहां जाता हूं अर्थात अपने निज रूप में जाता हूं तो शायद ये संत कुछ बन जाते होंगे मगर मेरी बुद्धि नहीं मानती क्योंकि इन निज रूप के मानने बाले महात्माओं का अन्त में क्या परिणाम हुआ कैसी कैसी बीमारियों से मरे, देख लिया। फिर मैंने निज रूप को क्या समझा कि मैं कौन हूं ? मैं कोई भगवान नहीं, परमतत्व नहीं और न ही कुछ बन गया हूं। मेरा निज रूप क्या है ? मेरे अन्तर शब्द और प्रकाश के पैदा होने से एक चैतन अवस्था आ जाती है, जिसको सुरत कहते हैं जिस जगह से सुरत पैदा होती है वह जगह दायम और कायम है।

शब्द परगट तब धरया नाम।
शब्द गुपत तब रहा अनाम॥

जब कोई चीज़ गति में आयेगी तब शब्द होगा जब वह परमतत्व गति में आता है तो उस गति से शब्द और रौशनी का पैदा होना अनिवार्य है। उस गति के होने से जो एक चैतनता हमारे अन्तर पैदा होती है और शब्द को सुनती है, वह मैं हूं। मैं

कौन हूं ? प्रकृति के खेल में (Evolution) में, मैं एक चैतन का बुलबुला हूं। इसके अतिरिक्त मेरी कोई और हस्ती नहीं। मैं मालिक को ढूंढने निकला था। मालिक नहीं मिला। वह क्या है ? वह "वह" अवस्था है जहां 'मैं' नहीं रहती। जो मेरी 'मैं' प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है जब वह प्रकाश और शब्द को छोड़कर अपनी ओर वापिस होती है तो मैं गुम हो जाता हूं और सब कुछ भूल जाता हूं मेरा मस्तिष्क ही फेल हो जाता है फिर जब होश आती है तब हम कह देते हैं कि जिस मालिक को ढूंढने निकले थे वह अकाल, अनाम, अरूप और अरंग था। मैं नहीं मानता क्योंकि जब वह आप ही गुम हो गया तो उसने समझा कि बह अनाम, और अकाल है। वह क्या है ? किसी को कोई पता नहीं। मालिक क्या है ? सिवाय इसके कि वह है और एक सूक्ष्म तत्व है, और कुछ कहने का हक्क नहीं। क्योंकि यही बात कबीर साहिब और स्वामी जी महाराज ने कही है इस वास्ते मैं अपने आपको ग़लत नहीं समझता। राधास्वामी दयाल ने जेठ महीने में कहा है।

जेठ महीना जेठा भारी, जीवन हिरदे तपन करारी।
संत दयाल जीव हितकारी, भेद कहैं वह निजकर भारी ॥

अर्थात असली भेद बताते हैं। क्या बताते हैं? कि हमारा जो आद है जहां से हम आये हैं या प्रकट हुये हैं वह क्या है?

नहिं खालिक मखलूक न खिल्कत।
कर्ता कारन काज न दिक्कत ॥
राम रहीम करीम न केशो।
कुछ नहिं कुछ नहिं कुछ नहिं था सो ॥

विसमाध उस अवस्था को कहते हैं जहां आदमी सब कुछ भूल जाता है। अन्त में क्या कहा? अन्तिम अवस्था क्या है?

नहिं सतनाम न नाम अनामी।

वह क्या अवस्था हुई? वह अवस्था यह है कि जब आदमी प्रकाश और शब्द को छोड़कर अपनी ओर जाता है तो वह स्वयं ही नहीं रहता। उसकी अपनी हस्ती समाप्त हो जाती है। इस लिए उन्होंने कहा है कि वह न नाम, न अनामी, न सत, न अलख और न अगम है। वह क्या है? जिसने समझ लिया

उसने समझ लिया और चुप हो गया। जिसने नहीं समझा वह टक्करें मारता रहे। बेशक गुरुओं के दरबार में फिरता रहे और यही बात कबीर साहिब ने कही है कि यह भी नहीं है और वह भी नहीं है आखिर कहते हैं।

सखिया वा घर सब से न्यारा, जहं पूरन पुरुष हमारा :
जहां पुरुष तहवां कछु नाहीं, कहै कबीर हम जाना ॥
हमारी सैन लखै जो कोई, पावै पद निरवाना।

वह क्या हुआ जहां कुछ नहीं ? अपनी हस्ती ही गुम हो जाती है। प्रकृति में क्या है या प्रकृति क्या है या नहीं, मेरे विचार में शायद यह न कबीर साहिब को पता लगा और न किसी और संत को लगा। मैं नहीं कहता कि उन्हें पता नहीं लगा। लगा होगा मगर क्योंकि उन्होंने माना और कहा है। फिर मैंने क्या समझा ? मैंने समझा कि जीवन क्या है।

लब खुले और बन्द हुये।

हमारे अन्तर जब तक हमारी "मैं" है, हम इस मैं के चक्कर में आकर सब कुछ सच मानते हैं। "मैं" से ही कभी बाप, कभी बेटा, कभी स्त्री, कभी पति,

जीव, ब्रह्म, भक्त साधु और सन्त बनते हैं। जब हम प्रकाश में जाते हैं तब ब्रह्म बन जाते हैं और अनलहक मैं ईश्वर हूं की आवाज़ लगाते हैं। जब शब्द में जाते हैं तो हम अपने आपको शब्द स्वरूप समझने लग जाते हैं। हम असल में क्या हैं? मुझे तो पता नहीं लगा। मुझे तो यही पता लगा।

खोजत खोजत खो गये पाया नहीं अन्त।

वृथा निकली खोज, खोज से कुछ नहीं बनता ॥

आखिर मैंने खोज की, मुझे क्या मिला? मुझे यह मिला कि मैं कौन हूं? मैं एक चैतन का बुलबुला हूं। यह सारी सृष्टि किसी शक्ति के अधीन है। वह बनती और बिगड़ती रहती है। सब खेल उसका है। न उसका अन्त ईसा मसीह को लगा और न संतों को लगा। सब अपनी अपनी बातें कहकर चले गये। आखिर सच्चाई वर्णन करने से वे भी न टले। वह चेत महीने में लिख गये।

नहीं वहां सतनाम, न नाम न अनामी।

इसका क्या भाव? कि जब आदमी वहां चला जाता है तो अपनी हस्ती को अपने आप में गुम कर

लेता है। जब उसे फिर होश आती है तो वह कहता है कि भई! वहां तो न नाम, न अनाम और न सतनाम है अर्थात वहां पर कुछ भी नहीं है। उससे मैंने यह परिणाम निकाला कि मैं कौन हूं ? मैं चैतन का एक बुलबुला हूं। जिस प्रकार की प्रकृति मेरे शरीर और मस्तिष्क की बनी हुई है वैसा काम करने के लिए मैं विवश हूं। मेरे वश की बात नहीं। मेरे क्या, किसी के बस की बात नहीं। छोटा बच्चा कभी आराम से नहीं बैठेगा। कभी लेटा हुआ पांव मारेगा, हाथ मारेगा और कभी हर समय खेलता रहेगा। क्यों ? क्योंकि उसकी प्रकृति शरीर में है। वह विवश है। जब तुम जवानी में आओगे बेशक तुम शरीर न हिलाओ लेकिन तुम्हारा मन हर समय कुछ न कुछ सोचता रहेगा। कोई समय ऐसा नहीं होगा कि जब तक तुम जीवन में हो और तुम्हारा मन न सोचे। बुढ़ापे में सब कुछ भूल जाने को जी चाहता है मैंने ऐसा समझा। आज यह शब्द निकला था। मेरे दिल में विचार आया कि तूने क्या समझा जो मैंने जीवन में समझा वह कह चला।

तज पिंड को पहुंचा ब्रह्मण्डा, आगे बढ़ आया सच्च खंडा।
सतधाम से सत का बिमल स्वरूप, दिखा दिया सतगुरु स्वामी ने ।।

सतधाम का विमल स्वरूप क्या हुआ ? प्रकाश और शब्द कोई और विमल स्वरूप हो, हो मुझे पता नहीं। सफेद रंग की रौशनी और शब्द, यह मेरी समझ में आया है।

लख अलख अगम की गम पाई, लो राधास्वामी पद की शरनाई।
धुर धाम संत विसराम लोक, पहुंचा दिया सतगुरु स्वामी ने।

वह राधास्वामी धाम विश्राम कैसे हुआ ? विश्राम ऐसे हुआ कि अपनी हस्ती ही अपने आपको भूल गई और विश्राम आ गया। आप रात को गहरी नींद में सो जाते हो। क्या आप विश्राम नहीं करते ? संसार को भूल जाते हो सारे दिन के काम को भूल जाते हो। इसी प्रकार हम जागते हुये अपने आपको उस अवस्था में ले जाकर विश्राम करते हैं। विश्राम का क्या भाव है ? जहां हम सब कुछ भूल जाते हैं। हमारी टांग कटी हुई है और उसका ओपरेशन हुआ है हम गहरी नींद में जाकर भूल जाते हैं कि

हमारी टांग कटी हुई है या नहीं कटी हुई है। मैं विश्राम ऐसा समझता हूं।

राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी राधास्वामी।

राधास्वामी के नाम का मरम, जता दिया सतगुरु स्वामी ने।

राधास्वामी शब्द का जो मरम अर्थात भेद है वह समझा दिया। वह राधास्वामी क्या है ? जहां से *Self* निकला है ? उसे अकाल, अनामी पुरुष और बेअनामी समझ लो। वहां गति हुई तो मेरे अन्तर शब्द और चेतनता आगई। अपने आपको उस अवस्था में ले जाने का नाम राधास्वामी है बेशक मुँह से कोई राधास्वामी मत कहे मगर अपने आपको इतना ऊंचा ले जाकर अपनी ज़ात में अपने आपको भुला देने की अवस्था का नाम राधास्वामी धाम या अनामीपद है। अगर इसके अतिरिक्त कुछ और राधास्वामी है तो राधास्वामीमत वालो ! मुझे पता नहीं लगा। अगर तुम जानते हो तो मुझे समझा दो। मैं हेराफेरी नहीं जानता। मैंने सच्चाई वर्णन कर दी ताकि निजी स्वार्थ, निजी मान और निजी धन के लिए मुझपर कोई पाप न चढ़े।

अपना भाग जगाओ। भाग टुकड़े को कहते हैं हमारे मस्तिष्क में खोपड़ी के अन्तर जितने *Cells-Function* करते हैं, जो आदमी अपने अन्तर साधन करता है उसके सारे *Centre* खुल जाते हैं। इसका नाम भाग जागना है। लोगों ने भाग जगाने का यह अर्थ समझा हुआ है कि आदमी भाग्यशाली बन जायेगा। अगर तुमने पिछले जन्म में दिया हुआ नहीं है तो क्या लोगे। तुम्हें नाम जपने से रुपया नहीं मिलेगा। संसार भूला हुआ है। नाम जपने से तुम्हारे मन को शान्ति और तुम को अनुभव होगा लेकिन संसार का सुख तुम्हारे कर्म से मिलेगा। इसलिए कर्म किया करो। किसी की सहायता की हुई है तो तुम्हारी सहायता होगी। अगर तुमने किसी की सहायता नहीं की हुई है तो तुम्हरी कहां से होगी। यह कलयुग है। लेना देना बना हुआ है। जो देता नहीं उसे कुछ नहीं मिलता मैंने सारा जीवन दिया हुआ है मुझे मिलता है। अपना अनुभव बताता हूं। जो आदमी परदा रखकर दान लेकर खाता है जबकि उसके पास अपना धन है। साधु लोगों के पास अपना धन होता है फिर भी ये मांगते फिरते हैं ये दोषी हैं

और ग़लती करते हैं। अगर आपके पास धन नहीं है तो ले सकते हो मगर वह भी कुछ समय के लिए पेट भरने या सर्दी से बचने के लिए कपड़ा। इकट्ठा नहीं कर सकते। जो दूसरे दिन के लिए धन इकट्ठा करते हैं वे दोषी हैं।

सब को राधास्वामी

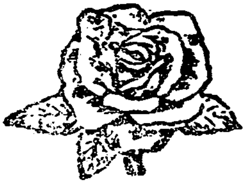

सत्संग परमसंत परमदयाल
फकीरचन्द जी महाराज
मानवता मन्दिर
होशियारपुर।

दिनांक 18-3-79

राधास्वामी। मैं तरयानवे साल का हो गया। मेरा हृदय बहुत सच्चाई प्रिय है किसी को सत्संग नहीं कराता अपने आपको ही सत्संग कराता हूं। मैं ब्राह्मण के घर पैदा हुआ। मैं राम कृष्ण, देवी देवता ईश्वर जो संसार को पैदा करता है उसको मानने वाला था। जिस प्रकार मैं कहा करता हूं, मेरा भाग्य अच्छा या बुरा, मैं यह नहीं जानता, एक दृश्य द्वारा मुझे 1905 में दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के चरण कमलों में ले गया। वह मेरे विचारों को बदलकर सन्तमत या गुरुमत की ओर ले गये। जब इस गुरुमत अर्थात कबीर साहिब और

राधास्वामीमत की किताबें पढ़ीं। उन्होंने इस संसार के पैदा करने वाले को ज़ालम और निर्दई कहा है। अगर मैं पहले इन संतों की बाणियें पढ़ता तो मैं कभी राधास्वामीमत में न आता, मगर दाता से तो मेरा विश्वास नहीं टूटा। लेकिन जो इनकी किताबों में लिखा है मुझे उसका भेद नहीं मिलता था। मैं देखना चाहता था कि ये कहां पहुंचते हैं। इस भेद को जानने के लिए मैं दाता दयाल को तंग किया करता था। सुना था कि गुरु की सेवा करो। जितनी सेवा मुझसे हो सकी मैंने अपने विचार अनुसार की और अति प्रेम किया। मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूंगा और जो कुछ मुझे मिलेगा बता जाऊंगा।

अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं क्या सचमुच इस दुनिया के पैदा करने वाला वास्तव में ज़ालम है। आप देखो, पेड़ों में जान है। इनके पतों को कीड़े खाते हैं। पक्षी कीड़ों को खाते हैं। बड़ी मछली छोटी मछलियों को खाती है, हिरणों तथा दूसरे जानवरों को शेर खाते हैं। यहां इन्सान के साथ ज़ुल्म करता है। अपने स्वार्थ के लिए चार-सो-बीस हेराफेरी और

धोखा देता है फरेब करता है। यह बात साधारण आदमी तक ही नहीं। हम सन्त लोग जितना धोखा फरेब करते हैं शायद यहां किसी और ने नहीं किया। एक साधु सन्तों का ऐसा टोला था जिससे मैं यह आशा करता था कि ये सच्चे होंगे। मगर जो कुछ मैंने गुरु बनकर समझा है अगर यह ठीक है तो जितना जुल्म इन महात्माओं, धर्मों और पंथों ने सर्वसाधारण के साथ किया है किसी और ने नहीं किया। यह बिल्कुल सच कह रहा हूं।

मैं क्यों कह रहा हूं? मैं इस बार दौरे पर गया। डेढ महीने बाद आया। मैंने लोगों से ऐसी २ घटनायें सुनी कि मुझे आश्चर्य हुआ। कोई कहता है, बाबा जी! हमने आपको याद किया, आप आये, आपने यह कर दिया और वह कर दिया। लेकिन सच्चाई यह है कि मैं कहीं नहीं जाता कोई कहता था, जब हमें कोई कष्ट होता है, आपके फोटो के सामने प्रर्थना करते हैं, हमारे काम हो जाते हैं और मेरे बाप को पता तक नहीं कि कौन कौन आदमी मेरा ध्यान कर रहा है। एक ने कहा, जब हम बीमार होते हैं तो अन्तर में आपसे दवाई पूछ लेते

हैं, आप दबाई बता देते हैं, हम बाज़ार से लेकर खा लेते हैं और स्वस्थ हो जाते हैं और जब मैं बीमार होता हूं तो डाक्टर के पास जाता हूं। जब मैं अमरीका गया था। वहां पिटसवर्ग में हनमकुण्डे का एक डाक्टर श्री राम देव राव है। उसके लड़का नहीं था। उसका बाप श्री राजेश्वर राव भी गया हुआ था। उसकी स्त्री बड़ी Anxisns थी। वे दोनों मेरे पास आये मुझे तंग किया और कहा बाबा जी मेरे लड़का हो जाये। मैंने कहा, हो जायेगा, विश्वास रखो। अगर लड़का हुआ तो उसका नाम शिव देव राव रखना। अब जब मैं हनमकुण्डे गया तो उसका अमरीका से टैलीफून आया कि लड़का पैदा हुआ यह जो कुछ होता है, यह सब लोगों का अपना विश्वास और श्रद्धा का फल है या कोई मेरी कही हुई बात पूरी हो जाती है तो उसका यह अर्थ नहीं कि मैं करता हूं। ऐसा होना होता है वह मेरे मुँह से निकलता है। अगर मैं करने वाला होता तो अपने पेट की दर्द और खारश का इलाज कर लेता। अब ऐसी बातें दूसरे गुरुओं के यहां भी होता है मगर यह गुरु लोग पब्लिक को साफ बात नहीं बताते जिसका

परिणाम यह है कि हम महात्मा पब्लिक से अनुचित लाभ उठाते हैं। मेरा विश्वास Faith इन सब धर्मों और पंथों से उठ गया। किसी ने भी हमें सच्ची बात नहीं बताई। दुनियां में कहीं भी सच्चाई नहीं है। क्योंकि सत्यता नहीं है, इसलिए संसार में चैन सुख और अराम नहीं है। हम सब अपने स्वार्थ के लिए चार-सौ-बीस, हेराफेरी और धोखा फरेब करते हैं। संतों ने शायद इस विचार को समझकर जिसको मैंने समझा है, उस ईश्वर या खुदा को, जिसने यह दुनियां पैदा की है निर्दई, जालम, काल कराल कहा हो। मगर जब मैं सोचता हूं कि जिन सन्तों ने इस काल और माया के विरुद्ध आवाज़ दी और हमें इससे छुड़वाकर अर्थात काल, माया, ईश्वर और परमेश्वर से छुड़वाकर, अपनी पूजा करवाई इनको भी तो काल और माया ने नहीं छोड़ा। जब मैं इनके जीवन का परिणाम देखता हूं तो मेरी जान कांपती है।

सच्ची बात क्या है? मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। दूसरे दाता दयाल ने मुझे आज्ञा दी थी कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा

को बदल जाना कबीर साहिब ने धर्मदास को सच्ची शिक्षा और सच्चाई वर्णन करके कह दिया :—

धर्मदास तोहे लाख दुहाई।
सार भेद बाहर नहीं जाई॥

राधास्वामी दयाल ने बाणी में कहा था।

सन्त बिना कोई भेद न जाने।
वे तोहे कहें अलग में॥

वह जो अलग का भेद था वह मैंने समाप्त कर दिया। मैंने संतमत या धर्मों का परदा खोल दिया। क्यों खोला ? कोई किसी पर उपकार किया है ? मैंने किसी पर कोई उपकार नहीं किया। जब मैंने देखा कि इन सन्तों की यह दशा हुई, कोई T. B., कोई कैंसर और कोई किसी बीमारी से मरा, किसी की स्त्री उसके कहे में नहीं थी, किसी के बच्चे नालायक थे तो मैं डर गया हूं। मैं सोचता हूं फकीरचन्द ! अगर तू अपनी नीयत को साफ नहीं रखेगा तो तुझे भी कर्म का फल भोगना पड़ेगा। केवल मैंने अपनी जान बचाने के लिए सच्चाई का वर्णन किया है। मैं यह जानता हूं कि जो कुछ मैं सच्चाई वर्णन करता हूं

उसे दुनियां सुनने के लिए तैयार नहीं और जो पिछले संतों ने इशारों में किया उनका विरोध हुआ। गुरु नानक साहिब को कुराहा कहते रहे। राधास्वामी दयाल को जब बाहर पालकी में ले जाते थे तो लोग कहा करते थे, बोलो, "राम-राम सत है" अर्थात मुर्दा लिए जाते हैं। कोई सन्त ऐसा नहीं हुआ जिस का विरोध न हुआ हो। मैंने विरोध की परवाह नहीं की। मैंने इन सन्तों से स्वयं मिलकर पूछा कि मेरे साथ यह बीती, तुम अपनी बीती बताओ ? वे सब मेरे सामने मानते हैं कि जो कुछ तुम कहते हो यह ठीक है मगर पब्लिक के सामने यह नहीं कहते। क्या कहते हैं ? जिसने नाम ले लिया उसके सारे पाप कट गये। ऐसा कहने वालो ! एक फकीर आवाज़ देता है कि अगर गुरु ने चेले के सारे पाप काटे हुए होते तो मैं पूछता हूं उनके चेलों की टांगें क्यों टूटती ? उन्होंने आप पिछले समय में कितना कष्ट भोगा।

मैं क्या कहता हूं ? ऐ बन्दे ! तू राम-राम जप चाहे न जप, अपनी नीयत को साफ रख और मरने से पहले किसी स्थूल चीज़ से प्रेम (Attachment) न

रख। दूसरे सन्तों की बाणी को किसी ने नहीं समझा। कबीर साहिब साफ लिख गये।

गुरु को मानुष जानते ते नर कहिए अन्ध।
दुखी होयें संसार में आगे जम का फंद॥
गुरु किया है देह को सतगुरु चीन्हा नाहीं।
कहैं कबीर ता दास को तीन ताप भरमाहीं॥

इसके अनुसार जो यह समझता है कि मेरे गुरु बाबा सावनसिंह जी थे, फकीरचन्द है, महर्षि जी थे या अमुक है वह संतमत के असूल से बिलकुल गिरा हुआ है उसका कभी उद्धार नहीं होगा अगर वह बाबे फकीरचन्द का ध्यान करते हुये भी मरा तो वह सत्लोक नहीं जायेगा। क्यों? एक तो मेरा अपना अनुभव। लोग मरते हैं, कहते हैं, बाबा फकीर आया, कोई कहता है हवाई जहाज़ लेकर आया लेकिन मेरे बाप को पता नहीं कि कौन मर गया और कहां गया। जब ये बातें मेरे अनुभव मैं आई जिसको ये सब गुरु मेरे सामने मानते हैं और जो ये कहते हैं कि नाम ले लो मरते समय गुरु तुम्हें सतलोक ले जायेगा अगर मैं सत्यप्रिय होकर यह कहदूं कि यह ठगवाद है तो मैं दोषी नहीं हूं। मैं अनामी धाम से अवतार लेकर

इसीलिए आया हूं कि संसार को सच्चाई बताजाऊं यह सन्तमत की शिक्षा जो मैं दे रहा हूं, स्वामी जी या कबीर साहिब ने दी है, यह केवल उनके लिए है, जिनको इस बात का विश्वास हो गया है कि यह संसार दुखों की खान है, और वे यहां नहीं रहना चाहते ।

आप गृहस्थी हैं। आपको तो मुक्ति की भी इच्छा नहीं। आप तो पुत्र, धन, मान और लड़के लड़कियों के विवाह चाहते हैं। उन लोगों के लिए मेरा अनुभव यह है कि किसी रूप को बनालो जिस जगह तुम्हारा विश्वास बैठता है, मैं नहीं कहता कि तुम मुझको पूजो, उस रूप में उसको पूर्ण मानो, उसका ध्यान किया करो और मांगा करो। जो कुछ सच्चे दिल से मांगोगे वह मिलेगा। यह मैं क्यों कहता हूं ? एक तो मुझे मिलता है दूसरे कितने ही आदमी मुझे पूर्ण मानते हैं। वे कहते हैं कि बाबा जी ! जब कोई कष्ट होता है तो आपकी फोटो के सामने प्रार्थना करते हैं और हमारा काम हो जाता है लेकिन मेरे बाप को पता नहीं होता कि वह कौन आदमी है। न मैं जानता हूं न मुझे पता होता है।

मैं कुछ नहीं करता। हां अगर करता हूं तो केवल (Good wishes) देता हूं। मेरे पास दुखी लोग आते हैं मैं अपनी ओर से उन्हें (Good wishes) या जो अनुभव ज्ञान और समझ मैंने प्राप्त की है, देता हूं इसके अतिरिक्त मेरे पास और कुछ नहीं। आपकी इच्छा हो तो यहां आया करो अगर न हो तो न आया करो, आपकी इच्छा करे मेरी कोई किताब पढ़ो अगर न करे तो मत पढ़ो। मैं इस बात की परवाह नहीं करता। इसलिए सब सन्त भी बार-बार कहते हैं कि अपनी नीयत को साफ रखो यह दुनियां माया की है। शास्त्र भी कहते हैं कि हमारा विचार, बुद्धि माया है। बुद्धि का सम्बन्ध हमारे संकल्प से है, इसलिए अपने संकल्प को ठीक रखो। गृहस्थियों के लिए सबसे पहली और आवश्यक बात यह है कि अच्छा विचार लेकर संतान को पैदा करें। इस दुनियां को बनाने वाले ने हमें अपने ही रूप पर बनाया है और उसका अंश हमारे अन्तर हमारा मन है। जो संतान को संतान के विचार से पैदा नहीं करते, अपने मन के चसके या विषय विकार के लिए स्त्री के पास गये और बच्चे पेट में आ गये

वे ज़ालम हैं। वे अपने बच्चे और देश पर ज़ुल्म करते हैं। वे उस ख़ुदरौ (बिना चाह पैदा किये हुए) बच्चे से यह आशा रखें कि वह उनका सेवक होगा, नेक बनेगा या उनको उससे सुख मिलेगा तो वे भूल जायें। मेरी बात को बुरा न मानना। मैं स्पष्ट वर्णन करता हूं और इस स्पष्ट वर्णन का एक कारण है। 1950 में साठ वर्ष हो जाने पर मिलटरी वालों ने मुझे नोटिस दे दिया तब मैं बंगलौर से दिल्ली आया। वहां एक सत्संगी था। उसका मेरे साथ इतना प्रेम था कि मैं जो पत्र लिखता था वह उसे गीता की तरह ज़बानी याद कर लेता था। अंग्रेजी हो या उर्दु हो। तो मेंरे दिल में विचार आया कि शायद मैं मरजाऊं तो अपने बाद किसी को नियुक्त कर जाऊं। उसकी स्त्री और वह मेरे पास आया मैंने केला उठाया और कहा- बेटी ! यह ले, तेरे लड़का होगा उसका यह नाम रखना। मैं यहां चला आया। उनका पत्र आया कि लड़के ने अमुक दिन, घड़ी और जगह जन्म लिया है। सच पूछो तो मैंने पत्र बाहर पढ़ा, मैं अन्दर भी नहीं गया, साईकल पकड़ कर सीधा ऋषि राम के पास गया जो मेरा

साला है वैद्य भी है और ज्योषि भी है। उसके भी संतान नहीं थी, मुझ से प्रसाद ले गया था तो उसके बच्चा हुआ था, मैंने कहा-भई ! मैं ऐसे प्रसाद दे आया था, उस लड़के का टेवा बना दे। उस लड़के का टेवा बनाया। वह कहता है यह ब्रहस्पति लगन में है अगर पिछली आयु में लाभ करेगा और यह कुछ समय आदतों को खराब करेगा। मैंने कहा यह ऐसा नहीं करेगा क्योंकि मुझे तो विश्वास था कि जब मैंने उसे केला दिया तो मैंने कुछ अंग्रेजी और कुछ हिन्दी में उन्हें यह इशारा किया था कि जब बच्चा पेट में आ जाये तो तुम स्त्री पुरुष भोग न करना। जब उसने कहा यह होगा तो मैं समझ गया।

मैं शिवरात्री पर दिल्ली गया तो वहां वह स्त्री बैठी हुई थी उसकी गोद में बच्चा था। मैंने उस आदमी से पूछा, सच बता, जब बच्चा पेट में था तो तुम भोग करते रहे हो ? उसने कहा जी, करते रहें हैं। मैंने दोनों हाथ अपने सिर पर मारे। मैंने कहा मूर्ख ! तूने मेरे सारे जीवन की कमाई खराब कर दी। मैं दो साल उसके साथ नहीं बोला। इस वास्ते मैं आप लोगों में से किसी के साथ प्रेम नहीं करता।

प्रेम करता हूं मगर मैं आप पर विश्वास नहीं करता। मेरी बात को बुरा न मानना मैं तो अपना दिल खोलकर आपके सामने रख रहा हूं। क्यों नहीं करता ? संसार स्वार्थी है। अपने स्वार्थ के लिए आज्ञा मानता है वरना नहीं मानता। अब उस लड़के की शिकायतें आ रही हैं। मां बाप दुखी हैं।

अब मैं आपको बताऊंगा कि सत्संग क्या है ? दाता का शब्द है।

सत्संग की महिमा जान गया।
जान गया पहचान गया, सत्संग की महिमा जान गया।
सिमिट सिमिट जल भरे तलाबा, त्यों सदगुन चित आवें।
नित सत्संग के वचन से सज्जन, अपना जनम बताव।

क्या सत्संग की महिमा होती है ? हां, होती है। मैं दाता के पास गया और उनकी संगत की। क्योंकि मैं प्रेम करने के लिए गया था मुक्ति प्राप्त करने के लिए नहीं गया था। क्योंकि मैं हिन्दु था। हिन्दुओं में अवतार पूजा का वर्णन है। रामायण में लिखा हुआ है।

नाना भान्ति राम अवतारा,
रामायण शत कोट अपारा।

मैं उनके दरवार में एक *Vision* के रूप में राम समझकर गया था कि वह उस परम तत्व के अवतार हैं। वह मालिक के अवतार थे या नहीं थे मेरा इससे कोई मतलब नहीं। वह मेरा अपना ही विश्वास था। मैं उनके रूप में ज़ात को मानता था। उन्होंने मेरे विचारों को बदला और अवतार पूजा की बजाय गुरुमत की ओर ले आये। मगर मैं केवल प्रेम के मार्ग से गया था। उनसे मैंने प्रेम किया तो जो मुझे प्रेम, आनन्द मिला जिसका कोई हिसाब नहीं और उस प्रेम का ही यह परिणाम है कि मैं यहां बैठकर आपको सत्संग करा रहा हूं।

तो सत्संग से क्या मिलता है ?

विन सत्संग विवेक न होई।
राम कृपा बिन सुलभ न सोई।

सत्संग के बिना समझ नहीं आती है। मगर यह सत्संग भी मालिक की कृपा से मिलता है। तुम सत्संग गाने बजाने को कहते हो। मैं नहीं मानता। यद्यपि यह भी सत्संग का एक हिस्सा है। सत् का संग सत्संग कहलाता है। गुरु सत स्वरूप होता है।

जो गुरु पाखण्ड करते हैं और कहते हैं कि हम तुम्हारे अन्तर गये और बच्चा दे आये या अपने चेलों को पढ़ा करके अपने पीछे लगाया उनका सत्संग आपको कभी लाभ नहीं दे सकता जैसे सिनेमा में सीता का पार्ट एक कंजरी करदे तो सुनने वालों पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? कुछ नहीं। किसी पूर्ण पुरुष के सत्संग से मानव को केवल सच्ची सोजी मिलती है और यही सुखमणी साहिब में गुरु अर्जुन देव जी ने लिखा है।

सत्पुरुष जिन विबेकिया सतगुरु तिस का नाम।
ताके संग शिष्य उभरे नानक हरी गुण गांव।

वह सत्पुरुष कौन है ?

जिभ्हा एक अस्तुत अनेक।
सतपुरुष है पूर्ण विवेक॥

अर्थात सत्पुरुष पूरा विवेक, पूरा ज्ञान और पूरा अनुभव है और संतमत की वह सच्चाई मैं वर्णन कर रहा हूं। मैं दाता दयाल की शरण में गया था। वहां से प्रेम मिला मगर विवेक नहीं मिला। विवेक आप लोगों से मिला। जब आपने मुझे यह कहा कि मेरे रूप ने तुम्हारी सहायता की है तो मेरी आंख खुल

गई और सोचा कि मैं क्या समझता था और क्या निकला।

सिमिट सिमिट जल भरे तलावा, त्यों सदगुन चित आवें।
नित सत्संग के बचन से सज्जन अपना जनम बनावें॥

जिस प्रकार थोड़ा थोड़ा पानी चलने से तलाब भर जाता है इसी प्रकार सत्संग करने से कुछ न कुछ बुद्धि तथा समझ हर रोज़ आती रहती है। उस समझ का नाम ही विवेक है। जब पूरी समझ आ जाती है फिर उसे कुछ करना धरना नहीं होता जिस प्रकार अब मैं शब्द योग की परवाह नहीं करता। क्यों नहीं करता? जब मैं समझ गया कि मेरे मन के अन्तर जितने विचार होते हैं यह माया है, है नहीं, तो मैं मन को छोड़ जाता हूं। अब न मैं सहस-दल-कमल, न त्रिकुटि, न सुन्न न महा सुन्न न भंवर गुफा में अभ्यास करता हूं। मालिक एक अकाल पुरुष या ज़ात है। आपने आपको उसके सुपुर्द करता रहता हूं। अपने आप ही एक विशेष प्रकार का शब्द अन्तर पैदा होता रहता है Supermost Consciousness रहती है। अपने आपको उसके सुपुर्द करता रहता हूं मेरे पास दुखी आते हैं मैं एक जिम्मेदारी को महसूस

करता हूं और सच्चे दिल से चाहता हूं कि इस आदमी का दुख दूर हो जाये। हो या न हो, इसका मुझे पता नहीं है। आया मेरे कहने से हो जाता है या नहीं होता, इसे मैं नहीं जानता।

मेरी शिक्षा किसी विशेष धर्म वाले के लिए नहीं है। यह मनुष्य जाती के लिए है। सत्संग की महिमा परमार्थ के विचार से यह है कि मरने से पहले अपने मन का लगाव (Attachment) बिल्कुल गुरु की देह से भी नहीं रखना बल्कि गुरु की बाणी को पकड़ना है। इसवास्ते ठीक कहा है।

बाणी गुरु गुरु है बाणी, बाणी अमृत सारे।

जो बाणी या शब्द हैं उन्हें समझो। ग्रन्थ साहिब से शब्द को पढ़ लिया तो क्या हो गया। अगर शब्द को पढ़कर उसका अर्थ नहीं समझा और उसपर अमल नहीं किया या राधास्वामी पंथ में आकर गुरुमत में शामिल हो गये और गुरुमत को नहीं समझा तो क्या कर लिया ? कुछ नहीं।

एक दिना का काम नहीं है, दिन दिन सतसंग कीजे।
काल करम के जाल से बचकर, प्रेम भक्ति मन दीजे॥

राठ सुधरेंहि सत संगत पाई, पारस लोह समाना।
सत की संगत करे जो प्राणी, बने सुसाध सुजाना॥

मूर्ख से मूर्ख सत्संग पाकर सुधर जाता है। किसी अच्छे आदमी से प्रेम करो। यह आवश्यक नहीं है कि तुम किसी संत को ही गुरु मानो। उसके साथ मित्रता करलो मगर वह मित्रता सच्ची हो। अगर निजी स्वार्थ हो तो केवल यह हो कि उसका जीवन बन जाये। सत्संग के प्रभाव से समझ आ जाती है कि मन के जितने विचार, संकल्प और कल्पनायें हैं, यह माया है। फिर माया के यथायोग्य प्रयोग करने से ज्ञानी के अगले कर्म नहीं बनते। मगर उसे पिछले किये हुये कर्म भोगने पड़ते हैं। उसे लोक में भी मान है और परलोक में भी भलाई है।

बिन सतसंग काज नहीं होगा, समझ लेहु मन अपने।
जग व्यौहार पांच दस दिन के, रात समय के सपने॥
कहता हूं कह जात हूं भाई, सतसंग करो बनाइ।
लोक परलोक में यश और कीर्ति, राधास्वामी की शरनाई॥

अगर लोक में सुखी रहना चाहते हो तो अपने विचार को ठीक करो। "शिव संकल्पं अस्तु" संतान

को संतान के विचार से पैदा करो। सब से पहले वो मां बाप ज़ालम है जो संतान पैदा करते हैं। खुदरो (*Uncalled for*) संतान कभी भी तुम्हारे काम नहीं आयेगी। जब बच्चे पेट में होते हैं तो जैसे मां के विचार होते हैं वैसे प्रभाव बच्चे पर पड़ते हैं और वैसा ही बच्चा बनता है। हमारे बच्चे, लड़के लड़कियां समय से पहले कामी हो जाते हैं। वे समय से पहले क्यों कामी होते हैं और उसका कौन जिम्मेदार है ? मां बाप जिम्मेदार हैं। जब बच्चा पेट में होता है तो वह भोग करते हैं। आप सत्संग में आते हैं। आप में से ऊंची बातें तो शायद कोई समझता है। घर गृहस्थी का जीवन बनाओ। घर में शान्ति रखो तुम्हारे विचारमें बड़ी भारी शक्ति है। लोग मुझे बना लेते हैं और मुझसे काम ले लेते हैं लेकिन मेरे बाप को पता नहीं होता। इससे सिद्ध हुआ कि इन्सान के दिल में शक्ति है। अगर तुम्हारे दिल में शक्ति है तो मेरे दिल में भी होनी चाहिए। अगर मैं किसी के लिए सच्चे दिल से भला चाहूं और उसका मुझ पर विश्वास हो तो उसका भला

होना चाहिए। अगर नहीं होता तो या तो उसमें विश्वास नहीं है या मेरी गलती है। यह तो Law of Nature है।

राधास्वामी !

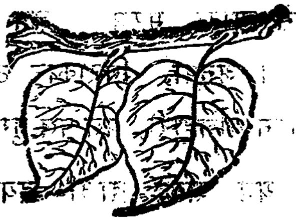

सत्संग परमसन्त परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर

दिनांक 8-4-79

साधु गुरु का रूप लखाऊं।

जो कोई आवे मेरी सभा में, गुरु का रूप लखाऊं।
संत रज तम के हद से बाहर, गुरु मूरति दरसाऊं॥
निर्गुन सर्गुन देह नहीं जाके, अद्भुत भेद जताऊं।
हाड़ मांस नाड़ी नहीं जाके, वाके रूप न नाऊं॥
सबका सबमें सबसे न्यारा, मरम विचित्र जताऊं।
रूप अरूप स्वरूप अनूपा, निराकार ठहराऊं॥
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, पल पल गुरु गुन गाऊं।

राधास्वामी। यह शब्द दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज का है। अपनी आत्मा से पूछता हूं, तू ने गुरु का रूप लख लिया ? अगर लख लिया तो मुझे क्या मिला ?

ते हम ईश्वर परमेश्वर, ब्रह्म
प थे, मत्था टेकते थे और मंदिरों
में न्तमत वाले सबका खण्डन
क जो कुछ है यह गुरु है। मैं
अप हूं, फकीरचन्द! अगर तू
केव न्तों की हां में हां मिलायेगा
तो हिन्दू या सिख हैं, अगर
आप छोड़ दोगे तो लोग कहेंगे
कि ि पने आपको लोकराज के
कारण बदलते हैं यद्यपि वे अपने आप जानते हैं
कि असलियत क्या है। ऐसे ही हम लोग एक गुरु के
पल्ले पड़ गये हैं, जानते हैं, शक है, भ्रम उठते हैं मगर
इतना उत्साह नहीं है कि उन भ्रमों को दूर करें और
सच्चाई की खोज करें। मैंने सारा जीवन सच्चाई
की खोज की।

अब सोचता हूं कि गुरु का दर्जा क्यों बड़ा है? एक तो बाहर के गुरु का दर्जा है। वह क्या करता? मैं वह बता सकता हूं जो मेरे गुरु ने मेरे साथ किया। और गुरु क्या करते हैं, यह मुझे पता नहीं। कैसे जीव का कल्याण करते हैं और कैसे जीव को सतलोक ले

जाते हैं। मैं जो कुछ कहता हूं वह अपना अनुभव कहता हूं।

हम जब छोटे बच्चे थे क्या हमें राम या गुरु की तलाश थी ? नहीं। बच्चा तो न राम राम चाहता है न खुदा खुदा चाहता है। उसे तो यह भी पता नहीं कि मैं कौन हूं और मुझे किस चीज की तलाश है ? भूखा पेट है। उसके शरीर की बनाबट कुछ खाने को चाहती है। इस वास्ते उसको गुड़सत दी जाती है। जब वह तनिक बड़ा हो जाता है तो फिर उसमें बुद्धि आनी आरम्भ होती है। मैं कई बार सोचता हूं कि छोटे बच्चों में इतनी बुद्धि क्यों नहीं आई जितनी मुझे आई है ? इसका मुझे उत्तर नहीं मिलता सिवाय इस बात के कि मस्तिष्क में विशेष विशेष प्रकार के Cells या कोठरियें होती हैं। इन कोठरियों में खून का दौरा जितना अधिक होगा इनमें उतने ही गुण प्रकट होते जायेगें और प्रकृति के अनुसार हमारे अन्तर विशेष प्रकार की बुद्धि समझ और ज्ञान पैदा होता जायेगा। हर आदमी की प्रकृति अलग अलग है। जिस प्रकार के वातावरण में बच्चा पलता रहता है और जिस प्रकार के उसे संस्कार मिलते हैं वैसी

बुद्धि होती है। वह बुद्धि अनुसार मानता है कि इस संसार का कोई मालिक है। जिसमें बुद्धि ही नहीं है वह क्या मानेगा। न वह राम को मानेगा न वह किसी और को मानेगा क्योंकि उसमें बुद्धि नहीं है, अकल नहीं है।

तो सिद्ध हुआ कि जिसको दुनियां में समझ विवेक और बुद्धि नहीं है वह राम को भी नहीं पूज सकता। तो इसलिए संतों ने गुरु का दर्जा बड़ा रखा है। गुरु नाम किसका है? फकीरचन्द, महर्षि या किसी और का है? सांसारिक दृष्टि कोण से हम इनको गुरु मानते हैं क्योंकि इन्होंने हमें सच्ची बुद्धि, सच्चा ज्ञान और सच्ची बात बतादी और हमें शान्ति और सुख मिल गया। मगर असली गुरु सतबुद्धि, ज्ञान और परम शान्ति है।

मैं अपनी आत्मा से प्रशन करता हूं जो तू दूसरों को कहता है क्या तुझे सुख मिल गया? हां, बुद्धि का सुख मिल गया। जो मेरी बुद्धि किसी चीज़ की तलाश में भ्रम वश भटकती फिरती थी वह समाप्त हो गई। गुरुमत क्या है? गुरुमत ज्ञान समझ और

विवेक है । मैं विवेकी नहीं था । मैं प्रेमी था । जितना मैंने प्रेम किया वह मुझे फटकारा करते थे । दाता कहा करते थे ।

कर सत्संग विवेक के साथ, तेरे सीस रहे गुरु का हाथ ।

जो आदमी सत्संग समझ के साथ नहीं करता उस पर गुरु की कृपा नहीं होती । मगर यह समझना सब के भाग्य में आता है या कि नहीं, यहां मैं फेल हो गया । फिर मैं यह मानता हूं कि उस मालिक का भेद किसी को नहीं मिला । उसका भेद मुझे तो मिला नहीं । जितना मिला वह मैं बताता रहता हूं ।

बुद्धि का जो आद है जहां से मन चित्त बुद्ध अहंकार पैदा होते हैं, वह गुरु का रूप है । दाता दयाल के जितने शब्द हैं सब लोगों के नाम हैं । लोगों ने पत्र लिखे उनको शहरों में उत्तर दे दिया उनकी किताब बन गई ।

हर एक बात हालात और वाक्यात के अनुसार कही जाती है इसलिए किताबों के लिखे पर विश्वास मत करो, स्वयं अनुभव करो सन्तों के मार्ग में अपने आपको पहचानना है, अपने अनुभव से लाभ उठाओ ।

गुरु के कहे को सुनो और अपने अनुभव के साथ मिलाओ, अगर ठीक हो तो उसपर चलो। तुम सफल हो जाओगे। जो स्वयं अनुभव नहीं करता वह अन्तिम अवस्था पर नहीं पहुंच सकता। इस शब्द में दाता दयाल कहते है कि संसार गुरुमत में आकर भूल गया। दुनियां ने देह को गुरु मान लिया: फकीर चन्द को गुरु मान लिया या किसी और को गुरु मान लिया। प्रारम्भ में तो उसे मानना ही पड़ेगा क्योंकि उसकी बुद्धि इतनी नहीं है। उदाहरणत: तुम्हारे बच्चों को कुछ भी हो जाये तो वे दौड़कर मां के पास आयेंगे यद्यपि मां उन्हें बचा सके या न बचा सके, यह और बात है। मगर वह मां के पास दौड़ेगा क्योंकि उसकी इतनी बुद्धि नहीं है। वह मां को ही सब कुछ समझता है। इसी प्रकार जिनकी बुद्धियें साफ नहीं हैं वे गुरुमत को नहीं समझ सकते उनके लिए यही है कि जिस प्रकार लड़का दौड़कर मां के पास जाता है उसे सहारा मिल जाता है इसी प्रकार जो राम या कृष्ण के पुजारी हैं, वे पुजारी बने रहें, अपना अपना उत्साह लें मगर वे दुखों और सुखों से बच नहीं सकते। देखो

मैं कह रहा हूं। इसी प्रकार किताबों वेद ग्रन्थ साहिब या रामायण पढ़ने से, मैं यह नहीं कहता कि लाभ नहीं होता, लाभ यही है कि एक तो मन की लगन अर्थात मन लग जाता है, दूसरे कुछ न कुछ सीखता ही है, मगर वह इस दुनियां से जो दुखों की खान है इसे विल्कुल पार नहीं कर सकता।

दाता दयाल ने एक शब्द में लिखा है और संत भी यही कहते हैं कि सुरत शब्द दुखों को काट देता है। सुरत शब्द ही नामदान है। पहले मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या काट देता है ? हां। मगर किन का ? जो गुरु परायण होते हैं और जिन्हें कोई पूर्ण पुरुष मिला हुआ होता है। पूर्ण पुरुष का यह भाव नहीं कि फकीरचन्द वल्कि जिनको सच्चा ज्ञान मिल जाता है और सच्ची बात को समझ जाता है कि बात यह नहीं यह है। उस समझ को देने के लिए दाता दयाल ने यह शब्द लिखा है।

साधू गुरु का रूप लखाऊं।

जो कोई आवे मेरी सभा में, गुरु, का रूप लखाऊं।

वह कहते हैं गुरुमत के लिए आपस में क्यों झगड़ते हो। जो मेरी सभा से आयेगा उसको गुरु

का रूप लखाऊंगा। फकीरचन्द ! मर जायेगा, सच-सच बता, तुझे गुरु के रूप का पता लग गया ? हां, लग गया। कैसे लगा ? गुरु की दया से। जो किसी भी गुरु का रूप तुम अपने अन्तर देखते हो, यह गुरु का असली रूप नहीं है, यह माया है। यह तो तुम्हारे मन के विश्वास का रूप है जैसा तुमने माना हुआ है, वह रूप है। जिस प्रकार एक स्त्री है, लड़के ने उसे मां माना हुआ है, भाई ने उसे बहन माना हुआ है तो उन्हें अपने ही मानने के अनुसार अपने ही विचार से लाभ पहुंचता है या हानि होती है। दाता फरमाते हैं।

सत् रज़ तम के हद से बाहर, गुरु मूरति दरसाऊं।

गुरु क्या है ? जो कुछ हमारे मन के अन्तर विचार उठते हैं उनको ऋषियों ने तीन जगह बांट दिया है। जो नेक, परोपकारी, सच बोलने वाला भला मानुष है, उसके अन्तर जो विचार उठते हैं उनका नाम सतोगुण है। जो लड़ाई झगड़े, शत्रुता और चंचलता के विचार होते हैं उनका नाम रजोगुण है और जिनकी बुद्धियें तेज़ नहीं हैं, खाना पीना सोना

ही काम है उनको तमोगुण कह दिया है। दाता फरमाते हैं, रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण से परे गुरु का रूप लखाऊं। क्या भाव ? तुम्हें कब गुरु रूप का पता चलेगा ? जब तुम्हारे बिचार न तमोगुणी, न रजोगुणी और न सतोगुणी रहें। दूसरे शब्दों में जब तुम्हारे अपने मन के विचार जो तुम्हारे अन्तर प्रकट होते हैं उन्हें अपनी ही कल्पना, विश्वास, विचार और माया समझकर उन्हें छोड़कर दसवें द्वार से आगे चले जाओगे तब तुम्हें गुरु के रूप का पता लगेगा और गुरु के दर्शन होंगे। मन के संकल्प को छोड़कर अपने आपको मन से ऊपर ले जाना ही सत, रज, तम से बाहर होना है। कौन देख सकता है ? जो अपने मन के विचारों को छोड़ सकता है।

निर्गुन सगुन देह नहीं जाके, अद्भुत भेद जताऊं।

वह कहते हैं जो मैं तुम्हें गुरु का रूप बताना चाहता हूं वह न निर्गुन है न वह सर्गुन है और न वह देह धारी है। वह तो अद्भुत है। भेद बताता हूं और इस भेद का बताना ही गुरुमत है। स्वामी जी ने लिखा है।

ह ने दीना भेद अगम का, सुरत चली तज देश भरम का।
टकन छूटा दहरो हरम का, संशे भागा जन्म मरन का।

गुरु क्या करता है ? भेद देता है। मगर यह भेद
र एक को जल्दी नहीं मिलता, समय लगता है।
से तुम्हारा बच्चा दूसरी कक्षा में पढ़ता है अगर
म उसे पांचवी कक्षा का भेद बताओ तो क्या वह
मझ सकता है ? नहीं। इसलिए यह श्रेणियें हैं।
ोई क ख ग में लगा हुआ है, कोई आगे चला गया।
ह के रूप को केवल वह जान सकता है जिसको
िसी पूर्ण पुरुष का सत्संग मिला हुआ हो और
सको दुनियां की इच्छा न हो। वह आदमी इस
त से पार जा सकता है दूसरा नहीं जा सकता।
म अभ्यास करने बैठते हो, मन कभी कहीं और
भी कहीं ले जाता है। क्योंकि एक तो आपको यह
न नहीं है कि मन क्या चीज़ है दूसरे मन के ऊपर
म्हारा कंट्रोल नहीं है। कंट्रोल क्यों नहीं है ? क्योंकि
सार की इच्छा है। उनके लिए वे अभ्यास करते हैं
र गुरु से कुछ मांगते हैं। जो गुरु या मालिक से
सार की चीजें मांगते हैं वे भिखारी हैं। जिस प्रकार
ब लोग भिखारी का मान नहीं करते इसी प्रकार

प्रकृति भी भिखारी का कोई मान नहीं करती। उसकी कोई मान प्रतिष्ठा नहीं क्योंकि वह भिखारी है। अगर मालिक से मांगना हो तो मालिक से मालिक को मांगो या शान्ति मांगो। मगर हम गृहस्थी कहां जायें ? हमारे जीवन की इतनी आवश्यकतायें हैं कि हम कमज़ोर दिल होने के कारण मांगते हैं। मेरे पास कई पत्र आते हैं, बाबा जी, आशीर्वाद दो। मैं भी लिख देता हूं, भई! मेरी आर्शीर्वाद से तुम्हारा भला होता हो तो मैं एक बार नहीं सौ बार आशीर्वाद देता हूं। उनका विश्वास होता है और उनके काम हो जाते हैं। उनकी अपनी श्रद्धा काम करती है और Credit मुझे मिलता है। यह सारा भेद है। गुरु का रूप सत रज तम से बाहर है। वह रूप न देह, न निर्गुण और न सगुण है। दाता दयाल कहते हैं वह एक नई चीज़ है।

हाड़ मांस नाड़ी नहीं जाके, बाके रूप न नाऊ।

दाता फरमाते हैं उसका कोई नाम नहीं है और न कोई हड्डी मांस है। हम लोग जो गुरु बने हुये हैं हमारी तो हड्डी मांस हैं। इस शरीर में क्या कुछ नहीं है। वह गुरु नहीं है। गुरु तुम्हारे अन्तर तुम्हारी

अपनी ज़ात और अपना ज्ञान है। उसे तुम कब अनुभव कर सकते हो ? जब मन को छोड़ जाओगे। मन को कोई नहीं छोड़ सकता जब तक उसे संसार की कोई आशा है बिल्कुल सच्ची बात है। एक प्राकृतिक आशा होती है जैसे रोटी खाने पानी पीने और टट्टी पेशाब जाने की। यह तो किसी की नहीं गई। जो इससे ज़्यादा आशा करता है वह जब भी अभ्यास में बैठेगा उसका मन फुरेगा।

लोग कहते हैं, भई! तेरा गुरु कौन! उत्तर मिलता है मेरा गुरु फकीरचन्द या कोई और। जिस पवित्र विभूति दाता दयाल ने यह शब्द लिखा है वह यह तो नहीं कहते कि मेरे असली गुरु, राये सालिगराम साहिब थे। राए सालिगराम साहिब ने तो यह असली गुरु का पता दिया इसलिए वह गुरु हैं, उसकी हड्डी पसली नहीं है। वह न निर्गुण है न सर्गुण है वह क्या है ? वह ज़ात है जहां न तुम्हें अपने शरीर की होश होती है और न मन के विचार उठते हैं। शेष जो कुछ रह जाता है वह गुरु का देश है। मुझे दाता दयाल ने कहा था "ले जा सबको गुरु के देश"। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं तू

ने गुरु का देश देखा है ? हां, देखा ! कैसे देखा
यह तो दाता दयाल की दया है दूसरे तुम सत्संगि
की दया है। इस वास्ते मैं इस समय सत्संगियों व
अपना सतगुरु समझ कर सच्चे दिल से नमस्कार करत
हूं। जो मुझसे उनकी सेवा हो सकती है करता हूं
मैं न गुरु हूं न महात्मा हूं मैंने गुरुमत को समझा है

सबका सब में सबसे न्यारा, मरम विचित्र जताऊं।

तुम यह नहीं समझोगे कि वह गुरु सबका, स
से न्यारा कैसे हुआ अगर तुम अपने ऊपर घटाओ
जिस आदमी को यह ज्ञान हो गया है कि म
कल्पना है वह सदा इससे निकल सकता है ? व
जब मन को छोड़कर ऊपर जायेगा तब वह गुरु क
रूप है मगर वह शरीर में भी तो आयेगा कि नह
आयेगा। कौन है जो शरीर में नहीं आता ? स
सन्त आते हैं। फिर वह क्या होता है ? शरीर
आकर अपने गुरु का या अपने आपका अनुभ
रखता हुआ दुनियां में सारे काम करता है मग
उसमें फंसता नहीं। यही हमारे जीवन के सन्तम
के साधन का सार भेद है। यही ज्ञानमत का भेद है
यही भेद हिन्दू धर्म और सूफियों का है। अगर किस

की समझ में आ जाये तो इतनी सी बात है अगर न आये तो सारा जीवन भटकता मर जाये। मगर जिनको दुनियां की आशायें हैं वे नहीं कर सकते मेरा भाग्य अच्छा था जब तक मुझे दुनियां की इच्छा थी मैं भी सिर पटकता था मैं बहुत अभ्यास करता था। दाता को लिखता था, मुझमें यह कमी है वह कमी है। वह उत्तर देते थे कि तुम्हारे अन्तर संसार की वासनायें मौजूद हैं। जिसने तुम्हें फकीर बनाया है वह फकीर बनाकर छोड़ेगा। जिसने मुझे फकीर का नाम दिया और मेरे नाम लिखा।

तू फकीर बन तू फकीर बन, तू फकीर बन प्यारे।

उसने मेरे साथ जो कुछ खेल खेला उसने मुझे फकीर बनाया। यह नहीं कि बात के समझ कर हम संसार से भाग जाते हैं। जब तक शरीर है मन भी रहेगा शरीर भी रहेगा, केवल इसमें न फंसना, इसके रूप को जान लेना और अपने आपको इससे अलग समझना यह भेद है। यही दाता फरमाते हैं।

सबका सबमें सबसे न्यारा मरम विचित्र जताऊं।

तुम्हारे अन्तर कोई ऐसी चीज़ है जो बाबा फकीर को बनाती है, जो मन में आती है। वह सबका

हो गया । मन बुद्ध चित सबमें आ गया और उससे अलग भी हो सकती है और सबसे न्यारा है । दाता फरमाते हैं, यह भेद Secret असलियत और सच्चाई बताता हूं ।

रूप अरूप स्वरुप अनूपा निराकार ठहराऊं ।

वह कहते हैं वह, जो गुरु है उसका कोई रूप न रंग है वह निराकार है । मैं क्यों कहता हूं कि ठीक है क्योंकि जब मन को छोड़कर ऊपर जाता हूं तो जो चीज़ हमारे अन्तर प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है वह गुरु का रूप है और वही मरम, भेद और तत्व है । वह मालिक हर हृदय में है । हज़ूर महाराज ने कहा है ।

भान रूप मालिक सुन भाई हर हृदय में रहा समाई वह जो असली गुरु है या मालिक है वह यहां नहीं रहता जो असली भण्डार है वह यहां नहीं रहता जैसे सूर्य की किरणें यहां काम करती हैं, सूर्य यहां नहीं आता । अगर सूर्य यहां आ जाये तो तुम सब जलकर समाप्त हो जाओ । इसी प्रकार वह मालिक है जहां सत रज तम नहीं है । अगर वह मालिक यहां आ जाये तो न मैं, न तू, सब संसार ही समाप्त

हो जाये। इसलिए यदि कोई आदमी उस मालिक से प्रेम करना वा उसकी सेवा करना चाहता है तो मानव मानव की सेवा करे Service to the Humanity मगर हम क्या करते हैं ? स्त्री पति, बाप बेटा एक दूसरे का दिल दुखाते हैं। मगर हम सारे संसार की तो सेवा नहीं कर सकते जिनको प्रकृति ने तुम्हारे साथ लगाया है, तुम्हारी बहन, बेटी स्त्री मां बाप बच्चे हैं, पहले निष्काम, स्वार्थ रहित होकर उनकी सेवा करो। उसमें अपना स्वार्थ न हो। मगर हम लोग अपने स्वार्थ के लिए संतान पैदा करते हैं बुरा न मानना। संतान के लिए स्त्री के पास कौन जाता है वे तो विषय भोगने के लिए जाते हैं और बच्चे पेट में आ जाते हैं। फिर तुम उनसे यह आशा करो कि वे बच्चे लायक होंगे, तुम्हारी सेवा करेंगे। वे नहीं कर सकते। यह बताये देता हूं। सरकार ने बच्चों की भलाई Welfare का साल रखा हुआ है। सरकार बच्चों की भलाई के लिए लाख कोशिश करे मगर सरकार का बाप भी उन्हें ठीक नहीं कर सकता। क्योंकि बच्चों को बच्चों के विचार से पैदा ही नहीं किया गया है। यह मेरा अनुभव है। मेरे भी

बिना इच्छा के संतान पैदा हुई थी मगर मालिक ने मुझ पर बड़ी दया करदी कि वह मर गई। मेरा एक लड़का है जोकि मैंने संतान के विचार से पैदा किया है, वह बड़ा लायक है।

मैं गुरुमत को समझता हूं और गुरुमत की सच्ची शिक्षा देता हूं कि असली बात यह नहीं यह है। मैं कहता हूं, ऐ इन्सान! अगर तू सच्चे मालिक की सेवा करना चाहता है तो सबसे पहले निस्वार्थ सच्चे दिल से अपने घरवालों की सेवा कर। लड़के बूढ़े मां बाप की सेवा करें, स्त्रियें पति तथा सास की सेवा करें और भाई भाई की सेवा करे। यह भेद है अगर यह बात समझ में आ जाये तो दुनियां के कष्ट ही न रहें।

राधास्वामी चरन शर्न बलिहारी, पल पल गुरु गुण गाऊं।

गुरु के गुण गाना क्या है? मुझे पता नहीं दाता दयाल गुरु के गुण कैसे गाते थे? मैं कैसे गाता हूं? मुझे यह पता लग गया कि एक तत्व है, मैं उसकी अंश हूं। यह सब संसार उसी तत्व से बना हुआ है। उसमें रहता हूं। इस ज्ञान को रखते हुए कि यह सब

माया का खेल है, मेरा यह घर नहीं इस ज्ञान का समझना ही गुरु के गुण गाना है। मैं महर्षि जी या राधास्वामी दयाल आगरे वालों के गुण नहीं गाता इस नियम Law को समझता हूं और खुश रहता हूं। मगर किसी समय मैं भी गिर जाता हूं और पछताना पड़ता है इसलिए अब मैं केवल उस परमतत्व आधार की शरनागत रहता हूं ऐ मालिक ! तेरी इच्छा पूरी हो। मैं कुछ नहीं जानता, गले पड़ा ढोल बजाता हूं, काम करता हूं और मेरा कोई स्वार्थ नहीं। आप जब आते हो आपका उपकार मानता हूं अपना कर्म काटता हूं। आप न आयें तो मुझे मेरे कर्म काटने का अवसर नहीं मिलता। कर्म इच्छा, वासना को कहते हैं। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा दाता दयाल ने कहा था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। आप आये हैं, जो कुछ मैंने सीखा है आपको बता दूंगा। मगर मैं यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं यही सत है। इस संसार में आज तक किसी भी सन्त को सच्चाई का पता नहीं लगा। सबने उसे बेअन्त हैरत रूप कहा। वही दशा मेरी है। बुढ़ापे में मैं शरणागत रहता हूं।

क्योंकि आप लोग आ जाते हैं। आप लोगों के विचार से कुछ कह देता हूं वरना अब मेरा कहने को दिल नहीं चाहता। मगर वह गले पड़ा ढोल बजाता हूं क्या करूं, किधर जाऊं, कोई वश नहीं।

अब मेरा धर्म शरणागत है। कभी कभी महीने दो महीने के बाद जब प्रकाश और शब्द को छोड़कर उसमें चले जाने का समय मिलता है तब न मैं न तू, न गुरु और न कोई और रहता है। मैंने क्या समझा कि जीवन क्या है ?

लब खुले और बन्द हुये यह राज़े जिन्दगानी है।

हममें "मैं" आई हुई है। यह हमें दौड़ाती है। शरीर की मैं, मन की मैं, आत्मा की मैं और सुरत की मैं। मेरी सुरत की मैं तो अभी तक गई नहीं। बाकी "मैं" से मैं बच गया। इस "मैं" से बचने के लिए, दया तो दाता दयाल की है फिर आप लोगों की दया है। केवल इस एक बिचार से कि 'मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, मुझे भेद की समझ आ गई।

अब तो मैं शरणागत हो गया मगर तुम नहीं हो सकते जब तक तुम अनुभव से न गुजरो। इसलिए

जीवन को अनुभव से व्यतीत करो। अपने जीवन को सोच समझ के साथ व्यतीत करो। जिस बात का तुम्हें अनुभव हो गया उससे दूर रहो। मगर हम हर रोज़ जूते खाते हैं, विपत्तियें सहते हैं मगर इस संसार का मोह नहीं छोड़ते।

लोग गद्दिएं दे जाते हैं। कैसी गद्दी। ज्ञान फैलाना है कोई फैलाये शर्त यह है कि तुम स्वयं आमल हो तब कह सकते हो। अगर तुम स्वयं आमल नहीं हो तो तुम दूसरों को उपदेश नही कर सकते। यदि उपदेश करोगे तो तुम धोखे बाज़ हो। क्योंकि तुम स्वयं अमल नहीं करते। याद रखो, जो नाम तुम्हें गुरु ने दिया है वह क्या नाम है? वह किस असलियत और हकीकत को प्रकट करता है? इसको समझकर जब तुम नाम लोगे तब तुम्हें लाभ करेगा। अगर तुम्हें नाम के असली मतलब का पता नहीं है तो तुम बेशक लाख नाम जपते रहो तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा जैसे निबू कहने के विचार से तुम्हारे मुँह में पानी आ जायेगा क्योंकि तुम निबू का मतलब समझते हो। यदि एक अंग्रेज़ को निबू कहो तो वह उसपर कोई विशेष ध्यान नहीं देगा क्योंकि

वह निबु का मतलब नहीं समझता। इसी कहावत है।

मेल मिले का मेला, गुरु मिले का चेला।

मुझे क्या मिला? शान्ति मिल गई। जिस खुदा को ढूंढता फिरता था पता लग गया कि वह क्या है।

सत्संग परमसंत परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर।

दिनांक 27-5-79

मंगल मय गुरु चरन, ताप त्रय हर लेने वाले।
भव दुख सकल मिटाय, शान्त पद देने वाले॥
भव सागर अति अगम पन्थ, नहीं सूझे कोई।
शब्द जहाज़ चढ़ाय, पार गुरु कीन्हा सोई॥
बूढ़त रहे मंझधार, मिला नहीं कोई सहाई।
आये गुरु दातार, बांह गह मेरी ठौर लगाई॥
नाम रूप का भेद दिया, भरम भेद मिटाया।
पद अभेद दरसाया, भेद का फन्द छुड़ाया॥
राधास्वामी पद कमल, मन मधुप लुभाना।
मन वाणी के परे, मिला धुरपद निरवाना॥

वह कहते हैं, कि गुरु के चरण सुख देने वाले और तीन तापों के हरने वाले हैं, भेद बताते हैं, फिर

अन्त में भेद को मिटाकर अभेद पद में ले जाने वाले हैं। गुरु की ऐसी स्तुति की गई है। इस स्तुति को सुनकर मेरे दिल में प्रश्न पैदा होता है, क्यों फकीर चन्द! तुम्हें ये चीज़ें मिल गई? तेरे तीन ताप कट गये? तुझको भेद मिल गया? अभेद पद में चला गया? अगर ये चीज़ें नहीं मिली तो मुझे कोई अधिकार नहीं है कि मैं गुरुमत का प्रचार करूं। अगर मैं प्रचार करता हूं तो मैं धोखे वाज, मक्कार और स्वार्थी हूं। अकालीमत निरंकारीमत, गुरु देवा-मत, राधास्वामीमत, भारतवर्ष में लाखों लोग गुरुमत में शामिल हैं। आप लोग भी सन्तमत या गुरुमत की महिमा समझकर सत्संगों में जाते हैं। कोई कहीं और कोई कहीं जाता है। क्या ये चीज़ें आप लोगों को प्राप्त हैं? नहीं। किसी विशेष २ को प्राप्त हों तो हों।

मैं 1905 में राम या मालिक के दर्शनों के विचार से एक दृश्य द्वारा दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के चरणों में गया था। मैं उनको गुरु मानकर नहीं गया था मैं तो उन्हें राम या मालिक का अवतार मानकर गया था। उन्होंने यह

संतमत दिया था। मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूंगा और जो कुछ मेरा अनुभव होगा वह बता जाऊंगा। मेरे ये त्रय ताप कब गये और किसके जा सकते हैं ? जिनको ज्ञान हो चुका है कि इस संसार में सुख नहीं है और यह संसार सदा रहने वाला नहीं है, हम यहां मुसाफिर हैं, चन्द दिन के लिए आये हैं, कोई सौ साल के लिए आया है, कोई सत्तर साल के लिए आया है केवल वह आदमी संतमत का अधिकारी है और वह इस शान्ति को प्राप्त कर सकता है, दूसरा नहीं।

मंगल मय गुरु चरन, ताप त्रय हर लेने वाले।
भव दुख सकल मिटाय, शान्त पद देने वाले॥

इस बाणी को पढ़कर हम लाख किसी गुरु के बाहर के चरणों को मत्था टेकते रहें और धो धोकर पीते रहें तो क्या शान्ति मिल जायेगी ? मैंने चरणों को धो धोकर बहुत पिया कि भेद अभेद का भेद मिल जाएगा ? नहीं। कशमीर से दो आदमी आये हुये हैं। वे मुझे वहां बुलाते हैं चण्डीगढ़ इंगलैंड और अमरीका वाले बुलाते हैं। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि अगर तू वहां,जायेगा तो किसी को कुछ दे

सकता है ? मैं कहूंगा कि नहीं। हम जितने गुरु बने हुये हैं, हम सब ठग हैं। आप लोगों को मूर्ख बनाकर लूटा जा रहा है। गुरु के चरण प्रकाश हैं जो हमारे अन्तर पैदा होता है। जब तक कोई आदमी अपने अन्तर प्रकाश में नहीं जायेगा और प्रकाश मय नहीं होगा उसके तीन ताप नहीं जा सकते। क्यों ? तीन ताप शारीरिक, मानसिक और आत्मिक दुख हैं। शारीरिक दुख तो आप सब जानते हैं। मानसिक दुख भी सब जानते हैं। आत्मिक दुख अज्ञान होता हैं। जब तुम्हारी आत्मा या सुरत मन को छोड़कर प्रकाश में जायेगी उस समय आपके त्रय ताप जायेंगे क्योंकि तीन तापों को महसूस करने वाला तुम्हारा मन है। इन्सान दुख भी और सुख भी अपने मन से मान लेता है। मैं आज इन कशमीरी सज्जनों को कह रहा हूं जो मुझे ले जाना चाहते हैं। ले जाने को तो ले जाओ अगर मैं जाऊं तो मेरा कोई हर्ज नहीं लेकिन मैंने सच्चाई बता दी। क्यों कहता हूं ? क्योंकि मैंने दाता दयाल के चरण बहुत धो धोकर पीये, आरतियें की, सोने के ताज बनाये, चान्दी के हुक्के बनाये और सिंहासन बनाये। उस समय की वह फोटो लटकी

हुई है मगर मेरी समझ में बात नहीं आई, शान्ति नहीं मिली और मेरे त्रय ताप नहीं गये। कब गये ? जब से मुझे मन के रूप का पता लगा और मुझे विश्वास हो गया कि मन जो कुछ सोचता है, यह माया है, है नहीं, तबसे मैं अपने मन के चक्कर को छोड़ जाता हूं। मुझे शान्ति कहां मिली ? कहां से समझ आई ? ऐ इन्सान ! जो कुछ तुझे मिलता है वह तेरे अपने पिछले या इस जन्म के किये हुये कर्मों का फल है। कोई गुरु महात्मा ईश्वर या परमेश्वर तुम्हें कर्म के फल जो कर्म तुम ने या मैंने किए हैं, उसके फल भोगने से नहीं बचा सकता। हां, ज्ञान की शक्ल में, जब अनुभव हो जायेगा अगर फिर दुख आयेगा भी तो आप महसूस नहीं करेंगे क्योंकि आपको समझ आ जायेगी कि आप कौन हैं और संसार क्या है। सन्तमत का सारा उद्देश्य यह है।

आप लोग मुझे कशमीर ले जाना चाहते हैं। अगर मेरा स्वस्थ्य ठीक रहा तो मैं चला जाऊंगा। मगर मैं आपको धोखे में नहीं रखना चाहता। मेरे पास सच्चा ज्ञान या शुभ भावना है मैं जादूगर नहीं, न पाखण्डी हूं और न चालाकी करता हूं। मैं तुम्हारी

तरह गृहस्थी हूं । तुम गुरुओं या धर्मों के जाल में मत फंसो । अपनी करनी को ठीक करो । किसी गुरु या महात्मा ने तुम्हारे कर्म को नहीं बदलना । कोई आदमी किसी के कर्म को नहीं बदल सकता । अगर बदलना है तो तुमने बदलना है । कर्म का फल तो भुगतना पड़ेगा । मगर ज्ञान होने से उसका दुख सुख नहीं मनाओगे । मैंने यह समझा है । मेरे जैसे आदमी के चार पांच सत्संग सुने हुये काफी हैं जिन्हें सच्चाई की आवश्यकता है ।

भव सागर अति अगम पन्थ, नहीं सूझे कोई ।
शब्द जहाज चढ़ाय, पार गुरु कीन्हा सोई ॥

यह गुरु की स्तुति है । इस संसार में इस मन के चक्कर में कोई सुखी नहीं । तुम अपने मन की दशा तो देखो, कभी दुखी और कभी सुखी हो । वह कहते हैं इसका पंथ अगम है कि इसका कोई भेद नहीं । अगर तुम बाहर के गुरु से ही प्रेम करते रहोगे तो तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा । कशमीरियो ! मेरी बात कान खोलकर सुन लो । बाहर के गुरु ने हमारे साथ क्या किया ? अगर आपका बेड़ा पार हुआ होता तो

आपके गुरु के स्वर्गवास होने पर, जो मेरे गुरु भाई थे, आप दूसरी जगह न जाते। मैं बात बिल्कुल साफ कहता हूं कोई लगाव लपेट नहीं। वे सब मूर्ख हैं जो गुरु की सेवा नहीं करते। तुम लोगों ने गुरु सेवा केवल यह समझी हुई है कि गुरु महाराज आये उन्हें कपड़े दे दिये, रुपये दे दिये, तुम तर जाओगे। यह बिल्कुल धोखा और फरेब है। किसी सच्चे पूर्ण पुरुष के सत्संग में जाकर उसकी बात को सुनना, समझना गुनना और उसके अनुसार अमल करना ही सच्ची गुरु सेवा है। जो संसार की सेवा है यह पिछले जन्म का लेना देना है। मैं दूसरी जगह नहीं गया क्योंकि मुझे उनके जीवन में ही भेद का पता लग गया था और भेद वह था कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। मैंने यहां और बसरेबगदाद में ऐसे ऐसे Case देखे तो मुझे विश्वास हो गया कि इस मन के चक्कर से कैसे निकलें? गुरु की दया, गुरु ने फूंक मारकर दया नहीं करनी। तुम भूले हुये हो। गुरु ने बचन कहने हैं, बात कहनी है। इस बात को समझ जाओगे तो तुम्हारा बेड़ा पार है। मैंने क्या बात समझी? मैंने दाता के दरबार में बड़ी सेवा की

है, बड़ा प्रेम किया है। तुम लोग तो भिखारी बनकर मांगने के लिए जाते हो और हम सब कुछ देने के लिए जाया करते थे। भिखारी का कभी कोई मान करता है ? भिखारी का मान नहीं है। तुम लोग गुरु, ईश्वर से धन, पुत्र या कोई और चीज़ मांगते हो, तुम भिखारी हो। तुम्हारा परमार्थ के दृष्टि कोण से कोई मान नहीं है। सच्ची बात कहता हूं। जिस प्रकार भिखारी हमारे दरवाज़े पर आता है, इच्छा करे तो हम उसे कुछ दे दें, फिर उसका मान नहीं है। ऐसे ही जो आदमी उस परमात्मा या गुरु से दुनियां और धन मांगता है, वह भिखारी है। प्रकृति के दरबार में उसका मान नहीं है। मालिक से मालिक को मांगा करो। तुम उसके हो जाओगे वह तुम्हारा हो जायेगा। जहां तुम्हारा दिल सच्चा हुआ तुम्हारे सब काम अपने आप हो जाएंगे। मैंने कितनी सच्चाई से बात की है। तुम लोग आते हो, बाबा जी ! हमारे पुत्र हो जाये, हमारी लड़की का विवाह हो जाये। अरे ! जिनका विवाह जहां जहां होना है वह हो जाना है मगर हमलोग भिखारी हैं। भिखारी का कोई मान नहीं। प्रकटतय: देखलो। इस वास्ते

मालिक से सिवाय प्रेम और अपने घर जाने के अच्छे महापुरुष दुनियां नहीं मांगते। इस संसार में हमने जो कर्म किये हैं उनका फल मिलता है। आजकल हम गुरुओं ने ढोंग बनाया हुआ है। नाम लेलो, गुरु तुम्हारे सारे पाप पिछले कर्म ले लेता है। संसार इन बातो में फंसकर लुट गया।

भव सागर अति अगम पन्थ, नहीं सूझे कोई।
शब्द जहाज़ चढ़ाये, पार गुरु कीन्हा सोई॥

शब्द जहाज़ दो हैं। एक मैं मुँह से बोल रहा हूं यह शब्द है। जो मेरे या किसी महापुरुष के को पकड़कर मान लेगा और गुनेगा, एक तो वह पार हो सकता है। मन महाचंचल है उसको वश करना कोई आसान बात नहीं है। कहना और चीज़ है किताबों में लिखना और बात है। क्रियात्मिक जीवन (Practical Life) में, मैं इतना ऊंचा होता हुआ किसी समय यह मन मुझे भी मार लेता है। किसी समय इस मन के अन्तर ऐसा विचार पैदा होता है जिसको मैं नहीं चाहता, मगर आता है फिर इस विश्वास और ज्ञान से कि जो कुछ फुरा है, यह असलियत नहीं, माया

है। कर्म काटता हूं। कान को हाथ लगाता हूं। मर जाना है। मैंने झूठ बोल कर क्या लेना है। ये जितने सहस-दल-कंवल, त्रिकुटि, सुन्न भंवर गुफा में मन का साधन करने वाले हैं इनको मन नहीं छोड़ेगा। इनके मन में अच्छाई या बुराई होती रहेगी जब तक यह ज्ञान नहीं होता और वे मन से निकल कर आगे नहीं जाते। जिस प्रकार बाबा सावनसिंह जी महाराज कहा करते थे "दस दरवाज़े लंघो ते आगे सत्गुरु खलोता है" वह दस दरवाज़े हमारा मन है। मन के परे जाओ। मन के विचारों में मत बहो। इस वास्ते तरने के लिए शब्द योग बनाया है ताकि फिर हम संसार में न आयें। सत्संगियों के अनुभवों को सुनने से मेरी आंख खुल गई और मेरी समझ में बात आ गई।

आप मुझे कहते हो, अनन्त नाग चलो। मेरा क्या जाता है मैं चला जाऊंगा। मगर मैं अपनी जान को बचाना चाहता हूं सच्चाई वर्णन कर जाता हूं कि मेरे किसी जगह जाने से अगर तुम्हारा विश्वास है तो तुम्हारा काम बन जायेगा। मैं कुछ नहीं करता। हां, केवल शुभ भावना देता हूं, यह ठीक है। अगर

तुम्हारे मन के विचार में शक्ति है कि तुम अपने कर्म को ठीक कर लो तो मेरे मन में भी शक्ति होनी चाहिए। अगर मैं किसी को शुभ भावना दूं तो उसे लाभ पहुंचना चाहिए शर्त यह है कि वह मेरी बात पर विश्वास करे। जो विश्वास नहीं करता उसे कुछ नहीं मिलता चाहे खुदा मियां भी उसे मिल जाये। मैं बचन कहता हूं जो मान जाता है उसे लाभ पहुंचना है।

बूढत रहे मंझधार, मिला नहीं कोई सहाई।
अग्ये गुरु दातार, बांह गह मेरी ठौर लगाई॥

यह हजूर महाराज की प्रेम वाणी का शब्द है। वह कहते हैं कि मैं इस मन के चक्कर में डोलता रहा और चक्कर खाता रहा। गुरु महाराज मिल गये उन्होंने मुझे एक ठिकाने लगा दिया। क्या उन्होंने फूंक मारकर ठिकाने लगाया? नहीं। बचन कहकर और अनुभव कहकर ठिकाने लगाया। इस वास्ते सबसे बड़ी चीज सत्संग है सत्संग के बिना जो नाम जपते हैं उनको कोई लाभ नहीं और जो केवल सत्संग ही करते रहते हैं और साधन नहीं करते उनको भी कोई लाभ नहीं। इस वास्ते सत्संग और नाम दोनों

इकट्ठे देते हैं। मगर सत्संग किसी पूर्ण पुरुष का हो। यह सच्ची बात है। मगर पूर्ण पुरुष की बात सारे आदमी नहीं समझ सकते यह तो जिसके भाग्य में है वह आता है। मैं तो यह समझता हूं कि अपनी कोशिश से कुछ नहीं बनता। मैं अब यह कहता हूं।

नाम रूप का भेद दिया, भरम भेद मिटाया।
पद अभेद दरसाय, भेद का फंद छुड़ाया।।

वह कहते हैं कि नाम रूप का भेद दिया और फिर उस भ्रम को मिटा दिया अर्थात नाम रूप को भी छुड़ा दिया। हम गुरु के पास गये थे। उन्होंने कहा सुमिरन ध्यान करो। जब गुरु का समय आया तो वह सुमिरन ध्यान और भेद का विचार ही उड़ गया। क्योंकि मैं जो असल में "मैं" हूं वह न सुमिरन न ध्यान में हूं। वह तो मेरा मन सुमिरन और ध्यान करता है। जव तक इन्सान सुमिरन ध्यान में लगा हुआ है वह मन से परे कैसे गया ?

आप मेरे भाई और बहनें हैं। मैं आपसे बिल्कुल झूठ नहीं बोलता। मैंने इस रास्ते सफर किया है। मेरी आंखें खुल गई। दाता लिखा करते थे।

फकीरा गुरु तो तेरे पास।

उन्होंने बहुत कुछ लिखा मगर मेरी समझ में नहीं आया। मुझे यह काम दिया था। मैंने भी यह काम कई आदमियों को दिया हुआ है मगर वे स्वार्थी हो गये। अपने मान में आ गये। थोड़ी सी सिद्धि शक्ति आ गई तो अलग हो गये। काम तो इसलिए दिया था कि इनको अकल आ जाये मगर अकल आने की बजाय ये दूसरों को भो बेसमझ बनाते हैं। यह सच्ची बात है।

नाम रूप का भेद दिया, भरम भेद मिटाया।

क्या भेद दिया? जो मैं दे रहा हूं कि ऐ इन्सान! असली मालिक और गुरु के चरण प्रकाश हैं और शब्द हैं। बाकी जितना खेल है यह सारा मन का चक्कर है। यह भेद दिया और फिर ज्ञान हो गया। अब कभी मन चंचल होता है तो सुमिरन ध्यान करता हूं नहीं तो सिवाय शब्द के मैं कुछ नहीं करता और अब तो मुझे शब्द की भी आवश्यकता महसूस नहीं होती मैंने जो कुछ समझा वह मेरे साथ है जिसको कि कबीर साहिब ने भी सबको नहीं बताया। केवल धर्मदास को बताकर कह दिया।

धर्मदास तोहे लाख दोहाई।
सार भेद नहीं बाहर जाई॥

स्वामी जी ने कह दिया।

संत बिना कोई भेद न जाने।
वह तोहे कहे अलग में॥

मैंने अलग का भेद काट दिया।

पद अभेद दरसाय, भेद का फंद छुड़ाया।

इसको कौन समझेगा? अर्थात भेद देकर फिर भेद का नामो निशान मिटा दिया। यह तो हज़ूर महाराज को पता होगा कि उनका क्या भाव है। मेरा क्या मतलव है? जब मैं मन को छोड़कर आगे जाता हूं तो मैं अन्तर जाकर प्रकाश को देखता और शब्द को सुनता हूं। प्रकाश और शब्द और चीज़ है और इन्हें देखने और सुनने वाली और चीज़ है। वह जो और चीज़ है जब उसकी तलाश करता हूं तो क्या हो जाता है? मेरी "मैं" ही नहीं रहती, मैं ही नहीं रहता। इसका प्रमाण जेठ महीने की स्वामी जी की और कबीर की बाणी से मिलता है। स्वामी जी फरमाते हैं।

जेठ महीना जेठा भारी, जीवन हृदय तपन करारी।
सन्त दयाल जीव हितकारी, भेद कहैं वे निजकर भारी ॥

क्या भेद ? मैं राम को मिलने निकला था। वह कहते हैं कि जहां से हम आये हैं वहां न खालक न मखलूक और न खलकत, न गुरु, न चेला, न स्वामी और न सेवक है। मैंने इसका क्या भाव समझा ? कि अगर कोई सन्त इस मन के चक्कर, प्रकाश और शब्द से ऊपर चला जाये तो वह अपने आपको महसूस ही नहीं करता। अंश कुल में मिल जाता है। मगर क्या ऐसे सन्त में कुछ शक्ति है कि वह कुछ कर सके ? नहीं। वह नहीं कर सकता।

लोग कहते हैं परमात्मा अलख और अगम है। मैं नहीं मानता। किसी को पूरा भेद नहीं मिला। न कबीर साहिब, व स्वामी जी न दाता दयाल और न किसी और संत को। जितना जितना किसी की बुद्धि ने काम किया उतना उतना उसने वर्णन कर दिया। जब इन्सान तलाश करता करता अपने आपको भूल जाता है तो जब होश आती है तो वह कह देता है कि मालिक अनामी, अरंग और अरूप है। "वह"

क्या है क्या नहीं, कोई कुछ नहीं कह सकता सिवाय इसके कि "वह" है। उसकी जो लै होने की दशा होती है उसको वह "वह" कह देता है। वही मालिक की दशा है क्योंकि अपने आप अरूप अनाम हो गया। उन्होंने समझा वह मालिक वही है। किसी में क्या शक्ति है कि वह उसे जान सके। हमारे शरीर का एक कीड़ा अगर यह चाहे कि वह हमारा सब कुछ जान ले तो क्या वह जान सकता है ? नहीं। इसलिए मेरी समझ में आया कि मैं कौन हूं ? मैं चैतन का एक बुलबुला हूं। जब ऊपर के मण्डल में शब्द पैदा होता है तो उसमें गति, सनसनाहट पैदा होती है, वह सुरत है। वह यहां नीचे आई हुई है। ज्ञान हो गया और वह सनसनाहट समाप्त हो गई। न मैं, न तुम और न कोई था। इस विचार ने मुझे शान्ति दी। मैंने अपने जीवन में यह समझा।

इस चैतन के बुलबुले में "मैं" आई हुई है। शरीर में आते हैं, मैं बाप, भाई और अमुक हूं। मन में आता है मैं मुख्यमन्त्रि, इन्सपैक्टर हूं आत्मा में मैं अलख, अगम और अनामी हूं। ऐ इन्सान ! तू असल में कौन है ? तू चैतन का एक बुलबुला है। तेरे

अन्तर "मैं" आई हुई है। इस "मैं" ने तुझे चक्कर में डाला है। यहां तक मेरी पहुंच है। अब मैं समझता हूं कि मैं चैतन का एक बुलबुला हूं। मौज ने मुझे बनाया। जब चाहे उसे तोड़कर ले जायेगी। मैं कहां जाऊंगा? न मैं पैदा हुआ और न मैं मरूंगा। वह माया है। मेरी एक "मैं" है, मैं मर जायेगी बाकी क्या रह जायेगा?

जो था रूप पहले वही रूप मेरा।

पहले क्या था? अलख, अगम और अनाम था। अब मैंने समझ लिया कि मैं चैतन का एक बुलबुला हूं। इस वास्ते इस समय मेरा मार्ग शरणागत है। वह मालिक एक है, अपने आपको उसके सुपुर्द करता रहता हूं। जिस तरह तेरी इच्छा है रख, मार चाहे छोड़, जो इच्छा है कर। मुझे यहां शान्ति मिली।

राधास्वामी पद कमल, मन मधुप लुभाना।
मन बानी के परे मिला, धुर पद निरवाना॥

राधास्वामी के पद क्या हैं? ये पांव हैं। दुनियां भूली हुई है। यह हमारा संसार का व्यवहार है। गुरु के चरण कमल प्रकाश हैं और यही सनातनधर्म कहता

है। जब इससे परे जायेंगे तो मन के अन्तर जो कुछ भी सोच विचार है सब समाप्त हो जायेगा। यह पद निर्वाण है। निर्वाण फूंक मारकर बुझाने को कहते हैं। मैंने यह समझा है।

मैंने परमार्थ के बारे बता दिया। इस संसार में दो मार्ग हैं परमार्थ और स्वार्थ। एक इस संसार में सुखी रहने के लिए वेद मार्ग है। वेद मार्ग की कुँन्जी क्या है? "शिव सकल्पं अस्तु" सदा अच्छा विचार रखो। अपने मन बचन कर्म से शुद्ध रहने की कोशिश करो। मन को शुद्ध रखने के लिए क्या चाहिए? पहले सत्संग चाहिए, उन आदमियों का जो मन के शुद्ध हों वरना कोई लाभ नहीं। नेक कमाई खाओ। अपने घरवालों की निष्काम सेवा करो।

घरों में प्रेम से रहा करो। अपने मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य का पालन किया करो। जो नौजवान बच्चे गन्दे काम करते हैं जब उन्हें जवानी आती है तो वे सुखी नहीं रहते। इस वास्ते बच्चों को बच्चों के विचार से पैदा किया करो। खुदरौ संतान तुम्हारे काम नहीं आयेगी। खुदरौ का भाव यह है कि अपने आप पैदा हुई संतान। स्त्री पुरुष कामातुर

होकर केवल भोग के लिए भोग करते हैं बच्चा पेट में आ जाता है। अब आप यह आशा करो कि वह बच्चा आपके किसी काम आयेगा, मैं नहीं मानता। आजकल अधिकतर खुदरौ संतान है। मैंने संतान के विचार से एक लड़का पैदा किया मुझे बचपन से आज दिन तक अवसर नहीं मिला कि उसे बुरा भला कहूं मारना तो एक ओर रहा। अब बड़ा अफसर है। मेरा यह अनुभव है। मगर मेरी एक लड़की मां का कहा नहीं मानती थी। अगर कोई बात कह दी तो उसने झट उत्तर दे दिया। मेरी स्त्री मुझे कहती थी जब स्त्रियें आती हैं तो झट उनकी पीठ थपथपाता है मगर लड़की को नहीं समझाता। एक दिन मैंने लड़की को कहा बेटी! तेरी मां शिकायत करती है। वह रो पड़ी और कहने लगी पिता जी! मुझे पता नहीं क्या होता है। जब मां कुछ कहती है तो मैं जवाब दे देती हूं। पीछे से मैं रोती और पछताती भी हूं।

मैं जानता था कि ऐसा क्यों होता था। मुझे और मेरी स्त्री को संतान की आवश्यकता नहीं थी। मैं कामातुर हुआ और अपने मन के साथ आध घण्टा

लड़ता रहा। आखिर लड़की पेट में आ गई। मुझे याद है कि मेरी स्त्री ने मुझसे पीपल की जड़ आदि मंगवाई जिससे बच्चा चला जाये मगर नहीं गया। जिस बच्चे का मां पहले ही स्वागत (Welcome) नहीं करती तो तुम कैसे आशा कर सकते हो कि तुम्हारी संतान तुम्हारे कहे में रहेगी। मैं गृहस्थियों को यह शिक्षा देना चाहता हूं।

घर मैं शान्ति रखा करो। जिस घर में कलह कलेश है, पति पत्नि, बाप बेटे की नहीं बनती, दिल में द्वेष है वहां आज भी सुख नहीं और कल भी सुख नहीं। क्यों ? तुम्हारे विचार में बड़ी शक्ति है। जो कुछ तुम सोचते हो वह तुम्हारे शरीर के ऊपर अवश्य प्रभाव डालता है। कोई आदमी नहीं बच सकता। जितनी आमदन हो उसके अनुसार खर्च करो। गरीबो, दुखियों की सहायता करते रहो। जो सहायता करता रहता है उसे आता रहता है।

आप काशमीर से आये हैं। मैंने आपको सच्चाई बता दी, कोई परदा नहीं रखा। बाकी जो कुछ है तुम्हारे हाथ में है अपने दिल को साफ करो। मैंने तो केवल सच्चाई वर्णन करनी है सच्चे बनो। गुरु

को अपने पास समझो। गुरु तुम्हारे दिल में रहता है। प्रातः सायं प्रार्थना किया करो।

सब झगड़े इस मन के हैं और कुछ नहीं। हम लोग असलियत को भूलकर दुनियां में फंस गये। संसार को नाम की आवश्यकता नहीं है। गृहस्थ में अपनी नीयत को साफ रखो। your own self is your own Guru बस, इतनी सी बात है। यह बात गुरु समझाता है। सत्संग करो जहां से तुम्हें सच्ची समझ मिले।

सब को राधास्वामी !

सत्संग परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर ।

दिनांक 8-8-1979

राधास्वामी !

आज राखी का दिन है मुझे बाहिर से काफी राखियां आई। यहां के आदमियों ने भी बाधीं हैं। सोचता हूं यह राखी प्राय: बहनें भाईयों को बांधतीं हैं ताकि वे समय पर उनकी रक्षा कर सकें। मेरे दिल में विचार आता है कि तुमने राखी तो बन्धवा ली, तू उनकी क्या रक्षा कर सकता है ? अगर नहीं कर सकता तो जितनी राखियां बन्धवाई हैं उसके लिए तू दोषी है।

रीति रिवाज के अनुसार है बहनें भाईयों को राखी बान्ध देती हैं, कोई 10 रु० देता है, कोई 20 रु० और कोई 5 रु० देता है। यह रुपया इकट्ठा करने

का साधन है। मैंने बहुत सोचा कि गुरु क्या रक्षा कर सकता है ? जो मुझे गुरु मानते हैं और उन्होंने जो मेरी रक्षा की है वह रक्षा मैं उनकी करना चाहता हूं। मगर वह मेरी बात को स्वीकार नहीं करते।

गुरु रक्षा जाके संग नाहीं,
ताको काल कर्म भरमाई।

गुरु रक्षा क्या है ? जब गुरु की रक्षा साथ हो जाती है, तो उसको काल और कर्म अर्थात समय और जो उसने कर्म किये हुए हैं उनका जब उसको फल मिलता है उससे वह घबराता नहीं, शान्त रहता है। यह है गुरु की रक्षा। काल कहते हैं समय को। काल में हमेशा परिवर्तन आता रहता है। कभी इन्सान अमीर है, कभी गरीब है। कभी कोई लड़का पैदा हो गया, कभी मर गया। कभी कुछ हो गया, कभी कुछ हो गया। कर्म वह हैं कि जो हमने पिछले किये हुए हैं उनकी सजा हमें मिलती है। अच्छे कर्म किये हुए हैं तो अच्छा फल मिलेगा अगर बुरे कर्म किये हुए हैं तो बुरा फल मिलेगा।

मैं सच्चाई पसन्द इन्सान हूं। अपनी आत्मा से पूछता हूं कि लोग तुझे गुरु समझ कर राखी बान्धते हैं। तूने उनको क्या दिया ? जो कुछ गुरु बनकर मैंने संसारी लोगों को दिया है आज दिन तक किसी महात्मा ने नहीं दिया। न ही इतनी रक्षा की है। यदि किसी की रक्षा की भी तो अकेले को बिठाकर भेद बता दिया। मैंने इसको स्पष्ट रूप से कह दिया। असल में रक्षा तो आप लोगों ने मेरी की। जो दया आप सत्संगियों ने मुझ पर की वह दया मैं आपको बताता रहता हूं। मगर यहां कौन सुनता है ? जो मैंने की है, उसको कोई सुनता नहीं। कोई सुनता है तो मुझे बताओ ? मगर मैं अपनी डियूटी पूरी कर जाना चाहता हूं। वह यह है कि गुरु की रक्षा ऐसा ज्ञान देना है जिस से इन्सान इस दुनियां से रहता हुआ काल और कर्म के चक्कर में आकर दुःखी और सुखी न हो। बस यह है गुरु की दया। यह दया तुम लोगों ने मुझ पर की और मेरी रक्षा की। जब मैं नहीं समझता था और स्वयं भ्रम में आप लोगों की तरह संशय ग्रस्त था। जिस तरह आजकल तुम गुरुमत को समझते हो वैसे मैं भी

समझता था। उस समय मैंने हज़ारों रुपये खर्च किए और सारी ज़िन्दगी मैंने इस पन्थ में गुज़ार दी। मगर तबीयत में सच्चाई की जरूरत थी। इसलिए आप लोगों की दया से मेरी समझ में बात आ गई और मुझे शान्ति मिल गई। मैं चाहता हूं आपकी भी रक्षा हो जाए। इसलिए वही बात आप लोगों को या जिन लोगों ने मुझे बाहिर से राखी भेजी हैं उनको समझाना चाहता हूं कि अगर तुम चाहते हो कि यह हो जाये, वह हो जाये अर्थात् दुनियां की इच्छाओं की पूर्ति के ख्याल से राखी भेजते हो तो यह रक्षा तुम्हारा अपना विश्वास, या तुम्हारा अपना कर्म करता है। कोई बाहिर का गुरु, कोई आदमी कोई परमेश्वर, कोई ईश्वर यह काम तुम्हारे लिए नहीं करता। जो कर्म तुमने किये हुए हैं उनके फल भोगने से तुम नहीं बच सकते। लाख ईश्वर आ जाये आप चाहो कि कर्म के फल को दूर कर सको नहीं कर सकते। परमात्मा आ जाये, देवी या ब्रह्मा आ जाये जो कुछ तुमने किया हुआ है उसको वे बदल नहीं सकते। ईश्वर तो कानून है। मेरी बात को समझ

कर आदमी जिस तरह का कर्म करना चाहे दृढ़ता से करे तो कोई रोक नहीं सकता। सारा खेल विश्वास, व विचार का है। विश्वास रखो। चाहे अपने पर रखो या मालिक पर रखो या गुरु पर रखो, मगर एक पर रखो।

"एक ही साधे सब सधे, सब साधे सब जाएं।"

जो कुछ है तुम्हारा अपना मन और विश्वास है। जो कुछ किसी को मिलता है वह उसको कुछ पिछले जन्म का और कुछ इस जन्म का। जो तुम्हारे कर्म में है वह मिलता है। नीयत को साफ रखो, जो कुछ किसी को मिलता है वह अपनी नीयत का फल मिलता है। अगर कर्म को बदल सकता है तो गुरु बदल सकता है। वह कैसे ? नाम देकर कि अपने मन की फुरनाओं, अपने विश्वास और अपने ख्याल को बदल दो, तुम्हारा कर्म बदल जायेगा। अगर बदल सकते हो तो तुम स्वयं बदल सकते हो।

आजकल दुनियां यह समझती है कि सत्संगियों या दूसरे लोगों के साथ जो कुछ चमत्कार के मामले होते हैं वहां गुरु रक्षा करता है जो ऐसा समझते हैं

वह अभी काल और कर्म यानि मन के चक्कर से बाहिर नहीं निकले। क्या कहा मैंने सोचो।

परसों एक आदमी आया था उसके पांव में तकलीफ थी, उसे फोड़े निकले हुए थे। दर्द बहुत थी। दो दिन तकलीफ उठाई। तकलीफ की बजह से रात को दो बजे तक जागता रहा। दूसरे दिन मेरे पास आया बाबा जी, रात के दो बजे आप मेरे पास आये आपने कहा कि तुम्हें कहां दर्द हैं। आपने मेरे पांव पर हाथ फेरा और चले गए। उसके बाद मुझे कोई तकलीफ नहीं हुई। माष्टर मोहन लाल जी ने भी कहा कि पहिले दिन मैंने उसे देखा था बड़ी तकलीफ थी। दूसरे दिन ठीक हो गया तब उसके पांव में कुछ नहीं था। अब मैं तो उसको ठीक करने के लिए नहीं गया। कौन गया? उसका अपना ही मन था। मुझपर विश्वास करता था, दु:खी था। पुकार की, उसके अपने ही ख्याल ने मुझे बनाया और उसने हाथ फेरा। मुझे तो अपनी, अपने परिवार, भगवान् या गुरु की कसम है मैं नहीं गया। इस तरह की कई घटनाएं मैं लिखता व सुनाता रहता हूं

मगर आजकल के मज़हबों पन्थों, गुरुओं और महात्माओं ने हम से परदा रखकर इस किसम के ख्यालातों को फैलाकर हमें बेवकूफ बनाया और लूटा है कि सारी जिन्दगी आते रहो राखियां बांधते रहो, हर महीने पैसे देते रहो और अन्त समय गुरु महाराज ले जायेंगे। मैंने इस भेद को खोला और सच्चाई बता दी कि यह बात ऐसे नहीं ऐसे है। यह जितना खेल है तुम्हारे अपने ही मन का है। मैं जानता हूं कि मेरे इस तरह से स्पष्ट बोलने से मन्दिर नहीं चलेगा। मगर मैं मन्दिर चलाने के लिए नहीं आया मैं तो आया हूं दुनियां की रक्षा करने के लिए। तुम लोगों ने मेरी रक्षा की। जिन लोगों ने मुझे रक्षा बान्धी है तुम्हारे तजुर्बों से बात मेरी समझ में आ गई और मैं चाहता हूं कि आपकी रक्षा हो जाये। मुझे क्या ज्ञान हुआ ? कि मन की फुरनाएं मन के संकल्प विचार और विश्वास सूक्ष्म माया और कर्म है। दाता ने कहा था कि तुझे सच्चा सत्गुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा और वह मिल गया। मेरी रक्षा हो गई। मगर मुझे अफसोस है कि मैंने

तो आप लोगों की बात सुन ली तुम्हारी बात को सच्चाई मान लिया मगर आप लोग मेरी बात को नहीं सुनते। यह हैरानी है कि दुनियां मेरी बात को सच्चा नहीं मानती। मगर फिर भी मैं आप लोगों से सच्चाई का व्यवहार करना चाहता हूं। तो आज राखी है। तुम लोगों ने या बाहिर के लोगों ने मुझे राखियां भेजीं। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं फकीर चन्द! मर जायेगा तू बता कि ये राखियां जो बन्धवाई हैं क्या तू रक्षा कर सकता है? हां। रक्षा करता हूं, और कर रहा हूं मगर मेरी रक्षा कौन सुनता है। यह बताओ पहले। जो रक्षा मैं कर सकता हूं मैं साफ कह देता हूं, ऐ इन्सान! जो कुछ है यह तेरा अपना ही मन है। इस मन को काबू कर। यह सुमिरन, ध्यान, भजन जो दिया जाता है वह इसीलिए दिया जाता है कि मन नियन्त्रण में आ जाए। इसके लिए केवल नाम जपना और अभ्यास ही काफी नहीं है बल्कि किसी सत्गुरु का सत्संग करो जो स्वयं बन्धा हुआ नहीं है। तब शान्ति मिलेगी। अपने मन, बचन कर्म को शुद्ध करने की

कोशिश करो। मेरा कर्त्तव्य कह देना था सो मैंने कह दिया। आज राखी थी। जो कुछ मैंने तुम लोगों से सीखा जिससे मुझको शान्ति मिली, भेद मिला कि असलियत क्या है, वह मैं बता चला। मगर असली रक्षा जो है जिससे इन्सान हमेशा के लिए दुःख, सुख से बच जाये वह केवल निर्बन्ध, निष्काम निस्वार्थ पूर्ण पुरुष कर सकता है। गुरु के चरण पहले बाहिर के चरण होते हैं। सतसंग में जाकर पहले सतसंग को सुनो। अगर यह समझ में आ जाये कि मन के विचार माया हैं, कल्पित हैं तो वह सारा काम करता हुआ दुनियां में नहीं फंसेगा, रोयेगा नहीं, हाय हाय नहीं करेगा और भविष्य के लिए अपनी दुनियां को अच्छा बना लेगा। गुरु नाम है ज्ञान का, समझ का और विवेक का।

तुम्हारे राखी बांधने के बदले में जो कुछ मैं देता हूं तुम लेते नहीं। मगर जब मैं इतने वर्ष नहीं समझ सका था तो तुमको क्या कहूं। सच्ची वात तो यह है कि जिसके भाग्य में होता है वह समझता है। इन्सान इस मन के काबू आया हुआ है। मन

नाच नचाता है। सव मन का खेल है। मन को अच्छे ख्याल दो। विश्वास रखो बुरी बात सोचो ही नहीं। जो मालिक करता है अच्छा करता है।

सब को राधास्वामी !

अब भारतवर्ष का क्या हाल होगा।

मेरी किस्मत अच्छी या बुरी या उस कर्त्ता पुरुष की मौज या सतगुरु की दया कुछ भी समझ लो, मुझे सन्तमत में ले आई। यहां मेरे गुरु महाराज दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज ने मेरे बारे में किताबों में फकीर लक्षण बताते हुए बहुत कुछ लिखा हुआ है। उसमें से एक यह है।

"तेरा रूप है अद्‌भुत अचरज तेरी उत्तम देही,
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल स्नेही।"

उन्होंने मेरे जिम्मे तीन चार डियूटियां लगाईं जिनको पूरा करने के लिए मैं काम करता रहता हूं। परसों 'हिन्द समाचार' के सम्पादक श्री रमेश चन्द्र जी, की तरफ से सम्पादकीय में लिखा था कि अब इस देश का क्या हाल होगा? उस वक्त मेरे दिल में ख्याल आया कि तेरे जिम्मे गुरु महाराज जी ने

जगत कल्याण की डियूटी लगाई थी। तूने जगत कल्याण के लिये क्या काम किया ? जगत कल्याण के लिए जो कुछ मैंने समझा वह मैं पहले ही कह चुका हूं। मगर सुनने वाला अगर कोई नहीं तो किसी को क्या सुनाऊं। मैं अपना फर्ज़ तो पूरा कर चुका हूं जिसे आज फिर से बता देता हूं। मैं जो कुछ कहता हूं वह किसी पुस्तक का लिखा हुआ नहीं है। गीता का उदाहरण नहीं, ज्योतिष का उदाहरणनहीं बल्कि मेरे जीवन के अनुभव का उदाहरण है। मैंने 1946 में 'अज़ादी की कुन्जी' नामक एक पुस्तक लिखी थी उसमें मैंने लिखा था कि जो कष्ट व क्लेश उस समय हम भारत वासियों को स्वराज्य के प्राप्त करने में हो रहे थे स्वराज्य मिल जाने के पश्चात् उससे भी अधिक कष्ट होंगे जो कुछ मैंने उस समय लिखा था वह ठीक निकला। अब वह कष्ट हो रहे हैं। सब जानते हैं कि देश में क्या हो रहा है। कोई महकमा ऐसा नहीं जहां रिश्वत नहीं। कोई घर ऐसा नहीं जहां अशान्ति नहीं। बाप बेटे की जान ले रहा है और बेटा बाप की, कई औरतें अपने पतियों को मरवा देती हैं और कई पति औरतों को मरवा देते

हैं। और भी जो रोज़ के झगड़े हैं वह अलग हैं यह उस समय मैंने 1946 में क्यों कहा था ? केवल उस समय हमारे आचार विचार और व्यवहार, में गिरावट थी। भाई का भाई के साथ धोखा, लोगों में घृणा द्वेष, इर्षा धोखा फरेव, चार सौ बीस लालच और हेराफेरी इन सब को ध्यान में रखते हुए कहा था कि परिणाम इसका ज़रूर खराब रहेगा। अब सरकार को भी देखो। कुर्सियों के लिए इन्होंने क्या कुछ तमाशा नहीं बनाया हुआ है। मैं यह सब दोष जनता का समझता हूं। क्योंकि यह सरकार के आदमी हमारे ही तो भाई हैं जो वहां भेजे गए हैं।

दूसरी बात यह है कि अगस्त 1947 में एक पुस्तक 'मनुष्य बनो' लिखी थी। इसमें इन बातों के अतिरिक्त कि इन्सान सामाजिक और अध्यात्मिक दृष्टिकोण से क्या क्या है। मैंने कहा था कि जब तक दिल्ली शहर भारत की राजधानी है। हकूमत की 75% ताकत शान्ति को कायम करने में लग जायेगी मगर देश में शान्ति फिर भी नहीं आयेगी। आज मैं देखता हूं कि मैंने जो कुछ भविष्य बाणी की थी वह शत प्रतिशत ठीक निकली है। आप पूछ

सकते हैं कि मैंने यह कैसे कहा था ? मैं ज्योतिषि नहीं, कोई पीर पैगाम्बर नहीं, कोई अवतार नहीं जो भविष्य वाणी करता। बल्कि मैंने सांईस के कानून को समझा है। पढ़े लिखे आदमी सब समझते हैं कि सांईस के अनुसार तत्वों का कभी विनाश नहीं होता (Matter never destroys) हमारे विचार भी सूक्ष्म तत्व हैं। हम बोल रहे हैं, कुछ सोच रहे हैं यह सब इस वायु मण्डल में जहां २ जो कोई कहता रहा है वहां विचार विद्यमान रहते हैं। वर्तमान सांईस ने इस पर तजुर्बे किए हैं। कुछ समय पूर्व जर्मनी के एक Senate hall में जहां २ जो कुछ बोते राजाओं Dukes ने कहा था उसको उन्होंने हवा में से Record भी किया था। इसी तरह दिल्ली कौरव पांडवों के समय से राजधानी चली आ रही है। उस समय से लेकर जितने बादशाह यहां आए हैं सब में लड़ाई झगड़ा, दंगा-फिसाद आपस में द्वेष, ईर्षा, बुग़ज, कीना और दुश्मनी आदि सब रहे। वह ख्यालात वहां वायुमण्डल में मौजूद हैं। इस ख्याल को ध्यान में रख कर मैंने अपनी डियूटी को पूरा करने के लिए आवाज़

दी थी कि जब तक राजधानी दिल्ली में है, देश में शान्ति नहीं हो सकती यद्यपि जो कुछ मैं यह कहता हूं इसके लिए मेरा कोई दावा नहीं। मैं यह नहीं कहता कि मैं जो कुछ कहता हूं यही Final है। यह सोचने वाले सोचें ? देख लो। अंग्रजों की राजधानी पहिले कलकत्ता होती थी। फिर जब से दिल्ली आये उस समय मैंने कहा था कि यह उजड़ जायेंगे और वह भी चले गए।

यह तो देश का मामला है। इसी तरह मैंने घरों के हाल देखे हैं कि जहां सास बहु की नहीं बनती या पति पत्नि की नहीं बनती, द्वेष रहता है या झगड़े होते हैं उस घर में कोई न कोई उपद्रव, कोई न कोई मुसीबत ज़रूर आयेगी उस घर में सुख नहीं मिलेगा। क्योंकि मेरे जिम्मे डियूटी थी और 'हिन्द समाचार' के अडीटर ने अब'भारत का क्या हाल होगा, के शीर्षक से लेख लिखा तो इस सांईस के कानून के मुताबिक मैं बताता हूं, कि भारत का क्या होगा। भारत का हाल कभी भी शान्तिमय नहीं होगा, नहीं होगा, नहीं होगा है क्यों हमारे में प्रेम नहीं, स्वार्थ भरा पड़ा मतलब परस्ती हैं, हम हेराफेरी करते हैं, चारसौबीस करते हैं।

•

देश में एक बज़ीर दूसरे बज़ीर के विरुध है। यह हो रहा है। यह तो राजनैतिक मामला है। हम तो राजनीति में हस्तक्षेप नहीं करते। मगर सच्ची बात कहने से रहा नहीं जाता। तो भारत का क्या होगा ? मुसीबत, तबाही, भूचाल, अर्थात हर जगह मुसीबत आयेगी। कोई बच नहीं सकता। अशान्ति रहेगी। आप ही देख लो जिन घरों में सास बहू के झगड़े हैं वहां क्या हाल है ? हर जगह यही बात है।

तीसरे, जगत कल्याण के लिए सबसे ज़रूरी बात जो मैं बर्षों से कहता चला आ रहा हूं वह यह है कि यह वर्तमान System of Election एक मीठा जहर है। इस तरह के Election से एक दूसरे से दुश्मनी, घृणा, द्वेष और झगड़े होते रहते हैं। वह जो जज़्बात, खुदगरज़ी के, ईर्षा के, हम भारत वासियों के अन्दर से निकलते हैं वह देश में शान्ति नहीं आने देंगे। इसके लिए जरूरी है कि सरकार किसी पार्टी की नहीं होनी चाहिए बल्कि पब्लिक से केवल योग्य आदमी चुनकर इनको सरकार में लाया जाना चाहिए। दलों की षद्धती Party System बहुत ज्यादा

हानि कारक है। तुम लाख कोशिश करो कोई भी पार्टी आ जाए यह शान्ति नहीं ला सकेगी। यह बिल्कुल नहीं ला सकेगी। अगर मेरी बात गल्त सिद्ध हो जाए, मैं मर जाऊंगा तो जहां मेरी अस्थियां होंगी वहां जो चाहो व्यवहार किया करना वजाए फूल चढ़ाने के क्योंकि। दो गुणा दो बराबर चार :-

कर्म जो, जो, करेगा तू, अन्त में भोगना पड़ना।

यह तो सांईस है और दाता दयाल भी यही लिखा करते थे। जैसा ख्याल, वैसा हाल, जैसी मति वैसी गति, जैसी करनी वैसी भरनी। तो भारत का क्या होगा? भारत का वह होगा जो हम लोग सोचते हैं। तुम्हारा हाल क्या होगा? जो तुम सोचते हो। मेरा परिणाम क्या होगा? जो कुछ मैंने किया हुआ है उसका फल मुझे मिलेगा। लाख गुरु बनकर मैं आप लोगों को उपदेश देता फिरूं। जो २ कर्म मैंने पिछले जन्म के या इस जन्म के किये हुये हैं। क्या मैं बच सकता हूं? यह बड़े २ सन्त न बचे। इन बड़े बड़े सन्तों का क्या हाल हुआ। ईसा मसीह का क्या हाल हुआ।

दाता दयाल ने मेरे जिम्मे यह जगत कल्याण का काम 1921 में लगाया था। यह 1921 के शब्द हैं। अब मैं सोचता हूं फकीर चन्द ! तू बता, तूने गुरु आज्ञा पालन की ? और बता कि तू क्या कर सकता है ? मैंने आज्ञा पालन की। मैं क्या कर सकता हूं ? तरीका बता सकता हूं। जीने का भेद बता सकता हूं। दुनियां का भला हो कैसे ? पांचो उगलियां तो बराबर नहीं होती मगर यहाँ कहीं भी सच्चाई नहीं है। हर घर में, हर जगह, हर डेरे में, हर साधु और महात्मा में, हर Political आदमी में और इन मजहबों और पन्थों में सब जगह चार सौ बीस है। कोई विभाग ऐसा नहीं है जहां रिश्वत नहीं। ऊपर से लेकर छोटी जगह तक सब जगह रिश्वत है। बगैर पैसे के कोई काम नहीं करता। एक साधु महात्मा और सन्त होते थे, मैं इनमें सच्चाई मानता था। मैंने गुरु बनकर देखा, जितना झूठ, जितना पाखण्ड इस समय के Guruism में मौजूद है। शायद गृहस्थी भी इतना नहीं करते हैं। मगर सच कहता हूं तो दुनियां विरोध करती है। हम लोग मूर्ख हैं :-

जिस नाल करां गलो उस नाल उठ चलां।

मैं आप लोगों को असलियत और सच्चाई का ज्ञान खोल कर बताता रहता हूं कि मुझे मत्था टेकने या मेरी स्तुति करने से तुमको शान्ति नहीं मिलेगी। यह केवल तुम्हारे मन का एक जज़्बा है। शान्ति मिलेगी आपको अपने अमल से और वह अमल आयेगा सत्संग में कोई महापुरुष जो बचन कहता है उनको श्रवन मनन करने से। मगर गृहस्थी हैं कोई सुनता नहीं। अरे, किसी को क्या कहूं कई बार मेरा मन ही मेरी बात को नहीं सुनता। तुमको क्या कहूं, किसी वक्त मेरे मन में भी ऐसा विचार उठता है, जिसको मैं नहीं चाहता मगर आ जाता है। यह तो आप लोगों की दया से मुझे पता लग गया और मैं तो बच गया। मेरी आंखें खुल गई मुझे मालूम हो गया कि यह जितनी मन की फुरनाएं और कल्पनायें हैं यह सब माया है। है नहीं! सन्त-मत या गुरुमत का यही भेद है। कौन महात्मा या गुरु है जो यह रहस्य अपने शिष्यों को बताता है। कोई नहीं बताता। यह धोखा, फरेब, चार सौ बीस नहीं है तो क्या है ? तो जहां हम महात्मा लोग भी फरेब, धोखा और चार सौ बीस करते हैं। Political

लाईन वाले भी करते हैं। व्यापारी भी करते हैं नौकर भी करते हैं। अच्छे पुरुष भी होंगे मगर बहुत कम। वहां तुम यह उमीद रखो कि तुम्हारे भारत वर्ष में सुख रहेगा या तुम सुखी रहोगे यह बिल्कुल गलत विचार है। अस्थाई कामयाबी तुमको हो जायेगी मगर उसका परिणाम बहुत खराब निकलेगा। मैं तो कर्मों का मारा हुआ हूं। एक डियूटी दाता ने लगाई थी मैं कर चला और सच्चाई से कर चला। आप लोग आ जाते हैं इसलिए मैं भी आ जाता हूं। मेरी किस्मत खोटी थी जो मुझे यह काम करना पड़ा। मैं इस काम के करने में सुखी नहीं हूं। क्योंकि सुनता तो कोई है नहीं। अपने ही मन का एक जज्बा था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। वह कह देता हूं। परन्तु सुनता कौन है। कोई नहीं सुनता। झूठी वाह-वाह कर जाते हैं? सच्चाई है कहां? ऐ इन्सान! सच्चाई तेरे दिल में है। अपनी नीयत को साफ रख। बस और कुछ नहीं। मेरी समझ में यह बात आई है। हां। यह समझने में मैं असफल हो गया कि हमारा अपने आपको या मन को काबू करना, बुराई न करना, हेराफेरी न करना हमारे बस में है

कि नहीं ? यह मैं नहीं कह सकता । यह मेरे बस में है कि नहीं है । किसी समय मैं जानता हूं कि सच्चाई यह है फिर भी मैं गिर जाता हूं । यदि मैं उस ख्याल या कर्म को नकमी में नहीं लाता मगर वह मन में आ जाता है । वह क्यों आता है ? इसका यही उत्तर है कि मेरे पिछले जन्म के संस्कार हैं । मैं एक गरीब सिपाही का लड़का हूं । मां बाप के संस्कार आते हैं । यह मैंने समझा है ।

नोट :-मैंने कहा है कि जहां २ कोई रहता है वहां उसके विचार वायुमण्डल में मौजूद रहते हैं । और वह अपना प्रभाव करते हैं । इसका उदाहरण मेरे अपने जीवन की एक घटना है मैं बागां वाले स्टेशन में जो आजकल पाकिस्तान में है, Assistant Station Master बदल कर आया । वहां जब मैं मकान के अन्दर जाता तो मां से लड़, औरत से लड़, छोटे भाई को मार मगर जब मकान से बाहर जाता तो कुछ नहीं होता था मेरा दिमाग ठीक रहता था । मैंने दुखी होकर दाता दयाल जी को लिखा कि यह मेरी हालत है । उन्होंने कहा मालूम होता है कि वहां जो कोई रहता था वह बड़ा लड़ाका था अगर

यह बात ठीक है तो वहां जोर २ से नाम का पाठ किया करो। पूछने पर पता लगा कि वहां एक बंगाली बाबू रहता था उसकी सास भी रहती थी और स्त्री भी थी। उनका वहां रोज़ दंगा फसाद (लड़ाई झगड़ा) रहता था। मैंने वहां जोर २ से दस-बारह दिन पाठ किया फिर यह तकलीफ नहीं हुई।

फकीर !

मेरी करबद्ध प्रार्थना

भारत वासियो ! बचपन से किसी चीज़ की तलाश थी, जिस को मैं मालिक या राम समझता था, मौज एक दृश्य द्वारा सन् १९०५ ईसवी में हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने सन्तमत दिया। इस सन्तमत के समझने में या जिस चीज़ की तलाश थी उसको पाने में तिरानवें साल का हो गया। अब वह चीज़ क्या निकली ? वह एक अवस्था है जहां मैं अपनी हस्ती को, हैपने को, भूल जाता हूं। जो कुछ बाकी रह जाता है उस को ब्यान करने के लिये शब्द नहीं मिलते। बस यह मिला मुझे।

क्योंकि हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे जिम्मे निबल, अबल, अज्ञानी जीवों की सहायता, जगत कल्याण और साथ ही जीवों को भव सागर से पार करने का काम लगाया था जिसे आज उनतालीस साल से करता हुआ चला आ रहा हूं, मैं ने जो काम किया यह मेरे निज अनुभव के आधार पर है अथवा आप बीती को सामने रखते हुए किया।

गुरु आज्ञा का पालन करने के सिलसिले में मैंने मानवता मन्दिर की नींव रखी। जो कुछ मैंने कहा वह पुस्तकों अथवा मानव मन्दिर पत्रिका के रूप में आज कल प्रकाशित होता है। ब्राह्मण होने के नाते जो प्रकाशन मन्दिर से होता है उस का कोई मूल्य नहीं रखा क्योंकि ब्राह्मण के लिये वेद बेचना पाप है, वेद नाम है ज्ञान का। पुस्तकें बड़ी होती हैं और दिन प्रति दिन मांग बड़॰ रही है। इस लिये मैं हाथ बांध कर कहूंगा कि जिन सज्जनों को मेरे अनुभव से सहमति न हो यूंहि किताबें मंगवाकर, क्योंकि ये मुफ्त मिलती हैं, मंन्दिर की हानी न करें।

अब किताबें अंग्रेजी और पंजाबी भाषा में भी मिलती हैं जो कि निम्न लिखित हैं।

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ, 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ। 4. ਮਾਨਵਤਾ। 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ। 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ।

अंग्रेज़ी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans
2. A Word to Canadians
3. Manavta the true religion
4. Religious Research
5. Weight of Soul
6. Truth Always Wins
7. Essence of Truth
8. Science of God Realization
9. True Sanatan Dharama or True Religion of Humanity
10. Jeewan Mukti
11. Art of happy living
12. Realization of Reality.
13. Master speaks to Foreigner
14. Key to Freedom.

जिन को ज़रूरत हो वह मंगवा सकते हैं हम बिना मूल्य भेज देंगे। मगर यह मुफ्त का काम कब तक चलेगा ? इस लिये जो सज्जन यह समझते हैं कि जो कुछ मैं ने इन किताबों में लिखा है इस में कुछ सच्चाई है, इस पर आचरण करने से इन्सान का पारिवारिक, सामाजिक और आत्मिक जीवन सुधर कर निर्वाण को प्राप्त हो सकता है तो यथा शक्ति मन्दिर की सहायता करें ताकि यह सब काम जारी रखा जा सके।

सरकार के आयकर के नियमानुसार ट्रस्ट वालों को साल में जितनी आय अथवा दान आता है वह उसी

साल में खर्च करना पड़ता है इसलिए मैंने जनता, विशेष कर गरीब रोगियों के इलाज में सहायता करने के लिये तीन हस्पताल एलोपैथिक, डेन्टल व होमियोपैथिक खोले हुये हैं मगर मुसीबत यह है कि बजाय गरीबों के अमीर आदमी अधिकतर इलाज कराने के लिये आते हैं। इसलिए अगर कोई सज्जन इस काम में सहायता करना चाहता है तो करे मगर यह विनती अवश्य करूंगा कि जो धनी लोग हैं वह यहां हस्पताल से मुफ्त दवाई न लें।

भारत वासियो ! मैंने जो कुछ किया निज स्वार्थ या संतमत के पक्ष में इसे सच्चा सिद्ध करने के लिये नहीं किया। मालिक के मिलने की तलाश थी जिस को हम ईश्वर परमेश्वर समझते थे। मेरा भाग्य अथवा दुर्भाग्य इस संतमत या राधास्वामीमत में ले आया। यहां इन संतों ने तमाम धर्मों, वेदान्त या सूफीमत तक का भी खण्डन किया हुआ है। आत्मा खण्डन सहन नहीं कर सकती थी इसलिये प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा। दाता दयाल जी महाराज ने काम दिया था। तुम ही सोचो राधास्वामीमत वालों की किताबों में संतों की इतनी

बड़ाई लिखी हुई है कि वह ईश्वर, परमेश्वर के पैदा करने वाले हैं बस, इसी एक राज़ को जानने के लिये मैंने अपना जीवन खो दिया कि संतमत वालों के पास क्या चीज़ है जो ईश्वर और परमेश्वर को भी पैदा करने वाले समझते हैं। दाता दयाल जी महाराज पर मेरा विश्वास तो नहीं टूटा मगर बाणी भेद नहीं देती थी। इसलिये प्रण किया था कि जो समझ में आयेगा बता जाऊंगा और दाता जी ने कहा था कि शिक्षा बदल जाना। हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने भी हुक्म दिया था कि निर्भय होकर काम कर जाना, सो कर चला, मेरा निज अनुभव मानता है कि संत बनना कोई सरल काम नहीं है। मुझ पर समय समय पर संतपने की हालत तारी होती है, चौबीस घण्टे नहीं। अब यह प्रार्थना है कि यह संसार मेरे लिए सदा के लिये लोप हो जाये और अपनी हस्ती खो कर ज़ात में समा जाऊं मगर यह उसकी इच्छा है।

फकीर !

शोक समाचार

आज तार आया कि श्री गौरस्टी वैंकटैया जो महान दानी थे, करीम नगर आंध्र प्रदेश के रहने वाले थे इस संसार को छोड़ गए, हम ने भी चले जाना है। ये चार भाई थे। छोटी आयु में गरीब थे, छाबड़ी लगाया करते थे, उस समय दाता दयाल और नन्दू सिंह जी एक दो आदमियों के साथ वहां से गुज़र रहे थे इस वैंकटैया जी ने उन से प्रार्थना करके बैठने को कहा और अपनी चादर नीचे बिछा दी, उस पर वे बैठ गए। दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज ने चार आने का सौदा उससे ले लिया और सब को बांट दिया वैंकटैया ने हाथ बांध कर कहा महाराज. हम चार भाई हैं, गरीब आदमी हैं, दया हो। दाता दयाल ने एक हैदराबादी रु० नन्दू सिंह से लेकर उसको दिया और कहा, ग़ल्ले में रख छोड़ो, अमीर हो जाओगे। साथ ही उन्होंने वैंकटैया को बोला कि अपने चारों ओर नज़र डालो, उसने डाली, दाता दयाल ने कहा जहां जहां तक तेरी नज़र गई सब का तू मालिक हो जायेगा और कहा खूब

कमाओ और अच्छी औलाद पैदा करो, नाम दान उसको नहीं दिया गया। उसने दाता दयाल के आदेश का पालन किया बड़ा भारी सेठ और दानी हो गया। लगभग ८० हज़ार रु० की एक सराय बनवाई। हस्पताल में जो मरीज़ आते हैं उनके रिश्तेदारों के ठहरने के लिए। प्रति वर्ष हनम्कोण्डा में बसंत पर और मानवता मन्दिर में सहायता किया करता था। मरना जन्मना एक साधारण बात है। खुशी यह है कि उसने गुरु का आदेश माना, और मुझे पूरा विश्वास है कि उसके जीवन का अन्त अच्छा होना चाहिये।

मैं सच्चे दिल से चाहता हूं मालिक करे उसकी आत्मा को शान्ति मिले। शेष हालात का मुझे कोई पता नहीं मैं उमीद करता हूं कि उसके भाई और उसकी सन्तान वैंकटैयाजी के असूलों पर चलेगी।

फकीर !

पूज्य श्री परम दयाल जी महाराज की यात्रा का कार्य-क्रम दशहरे का

ता०	रेल व हवाई जहाज के नंबर	स्टेशन से	समय	वार
28-9-79	11 जे० एच० 34 डाउन कश्मीर मेल	होशियारपुर	19-40 पी० एम०	शुक्रवार
3-10-79	आई० सी० 411 फलाइट	दिल्ली	6-45 ए० एम	बुधवार
5-10-79	49 अप पूर्वाचल एक्सप्रेस	गोरखपुर	6 ए० एम०	शुक्रवार
5-10-79	सड़क से	बनारस	3-30 पी० एम०	शुक्रवार
7-10-79	सड़क से	राधास्वामीधाम	17 पी० एम०	रविवार
9-10-79	सड़क से	खानपुर	7 ए० एम	मंगलवार
10-10-79	11 अप हावड़ा दिल्ली एक्सप्रेस	मुगल सराय	13 पी० एम	बुधवार
12-10-79	2 एल सी डाउन फास्ट पेसेंजर	कानपुर	7-20 ए० एम	शुक्रवार
13-10-79	सड़क से	लखनऊ	8 ए० एम	शनिवार
14-10-79	सड़क से	सुल्तानपुर	12 दोपहर	रविवार
15-10-79	सड़क से	लखनऊ	8 ए० एम	सोमवार
17-10-79	सड़क से	सीतापुर	16 पी० एम	बुधवार
18 10-79	51 अप जम्मू तवी एक्सप्रेस	लखनऊ	8-35 ए० एम	गुरुवार
21-10-79	सड़क से	सरसोंहेड़ी	6 ए० एम	रविवार
22-10-79	सड़क से	बनवारीपुर	15 पी० एम	सोमवार

29-9-79	कश्मीर मेल	दिल्ली	5-5 ए० एम	शनिवार
3-10-79	हवाई जहाज	गोरखपुर	7-45 ए. एम.	बुधवार
5-10-79	49 अप	बनारस	11-50 ए. एम.	शुक्रवार
5-10-79	सड़कसे	राधास्वामीधाम	17-30 पी. एम.	शुक्रवार
7-10-79	सड़क से	खानपुर	19 पी. एम.	रविवार
9-10-79	सड़क से	बनारस	7 ए. एम.	मंगलवार
10-10-79	हावड़ा दिल्ली एक्प्रेस 11 अप	कानपुर	20 पी. एम.	बुधवार
12-10-79	फास्टपेसेंजर 2 एल. सी.	लखनऊ	9-40 ए. एम.	शुक्रवार
13-10-79	सड़क से	सुल्तानपुर	12 दोपहर	शविवार
15-10-79	सड़क से	लखनऊ	4 पी. एम.	रविवार
15-10-79	सड़क से	सीतापुर	11 ए. एम.	सोमवार
17-10-79	सड़क से	लखनऊ	19 पी. एम.	बुधबार
18-10-79	51 अप	सहारनपुर	20-12 पी. एम.	गुरुवार
21-10-79	सड़क से	बनवारीपुर	10 ए. एम.	शनिवार
22-10-79	सड़क से	दिल्ली स्टेशन	20 पी. एम.	सोमवार
23-10-79	33 अप	होशियारपुर	6-25 ए. एम	मंगलवार

नोट :—प्रोग्राम में आवश्यकतानुसार फेर बदल किया जा सकता है ।

नकल पत्र जो परमदयाल जी महाराज ने भारतवर्ष के राष्ट्रपति को लिखा है

Dated 17th August, 1979

Dear Mr. President,

Jai Bharat

I do not believe in pleasing and praising but my purpose of writing this letter to you is to convey my unlimited joy I felt on reading news papers and listening your BROADCAST to the nation on the eve of 32nd Independence day that you want non-party Govt.

Since the attainment of Independence in the year 1947 I have been expressing my views by means of pen and voice to Country men that present System of elections is Sweet poison for the Human race but who cares to listen me.

To be brief, I heartily wish and pray that you may be blessed with courage and wisdom to Eradicate the evil of present System of elections.

This type of elections creates and excites eager desire for power and breeds thoughts of hatred, Contempt, jealousy and ill will.

Thought power moves gross matter. Just as our dream thoughts bring our limbs into action, dreadful thoughts move the tongue and men loose Semen by the thoughts of Sex in dream, then how can It be possible. that thoughts in present System of elections full of hatred, jealousy and malice will prove uneffected on our Country men. Thought waves remain in the atmosphere and in course of time bring havoc in the form of disputes, floods, diseases, lawlessness and unrest.

I, overjoyed by the Broadcast and news, I send my heartiest Congratulations that nature has compelled your brain to think in right direction. I send my good wishes that Almightly may bestow true wisdom and love to the people of India.

Yours in HIM
FAQIR

Regd. No. 26265/74 SEPTEMBER 10th 1979
MANAV MANDIR NW—HSP—7.

ADDRESS

To

1283 Sh. A. Hanmanth Rao
H. No. 10-3-194/8
Humayun Nagar,
Hyderabad-28, A.P.
500028

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.
Phone : 2022